

बड़े घर की बेटी

- प्रेमचंद

सारांश:

बेनी माधव गौरीपुर के जमींदार और नंबरदार थे। बेनी माधव के दो बेटे थे। बड़े का नाम श्रीकंठ था। उसने बहुत दिनों के परिश्रम और उद्योग के बाद बी.ए. की डिग्री प्राप्त की थी और इस समय वह एक दफ्तर में नौकर तथा शादीशुदा था। उसकी पत्नी का नाम आनंदी जो कि एक बड़े घर की बेटी थी। छोटा लड़का लाल बिहारी सिंह दोहरे बदन का सजीला जवान था। भरा हुआ मुखड़ा, चौड़ी छाती भैंस का दो सेर ताजा दूध वह सवेरें उठकर पी जाता था। परन्तु श्रीकंठ शरीर और चेहरे से कांतिहीन थे। इसका कारण उनकी बी.ए. की पढ़ाई थी। बी.ए. की डिग्री को प्राप्त करने के लिए उन्होंने अपने शरीर और स्वास्थ्य की चिंता न की और इसी के परिणामस्वरूप वे अपने छोटे भाई से विपरीत दिखते थे।

बेनीमाधव की वर्तमान में आर्थिक स्थिति कुछ इतनी अच्छी नहीं थी। बेनीमाधव अपनी आधे से अधिक संपत्ति वकीलों की भेंट कर चुके थे। वर्तमान में उनकी आय एक हजार वार्षिक से अधिक न थी। बेनीमाधव के पिता किसी समय में बड़े धन-धान्य से संपन्न व्यक्ति थे। उन्होंने ने अपने समय में गाँव में पक्का तालाब और मंदिर का निर्माण करवाया था।

आज उस तालाब और मंदिर की मरम्मत में भी मुश्किलें थी। आज केवल वे गाँव में एक कीर्ति स्तंभ अर्थात् केवल याद रखने वाली वस्तुओं बनकर रह गए थे। बेनीमाधव के पितामह द्वारा बनाए गए तालाब और मंदिर के लिए बेनीमाधव कुछ भी नहीं करते थे।

श्रीकंठ अंग्रेजी डिग्री बी.ए. के अधिपति होने पर भी पाश्चात्य सामाजिक प्रथाओं के विशेष प्रेमी न थे, बल्कि वे बहुधा बड़े जोर से उसकी निंदा और तिरस्कार किया करते थे। वे प्राचीन सभ्यता का गुणगान उनकी प्रकृति का प्रधान अंग था। सम्मिलित कुंटुब के तो वे एक मात्र उपासक थे। आजकल स्त्रियों में मिलजुलकर रहने में जो अरुचि थी श्रीकंठ उसे जाति और समाज के लिए हानिकारक समझते थे। इसलिए गाँव की स्त्रियाँ श्रीकंठ की निंदक थीं। कोई-कोई तो उन्हें अपना शत्रु समझने में भी संकोच नहीं करती थीं।

आनंदी स्वभाव से बड़ी अच्छी स्त्री थी। वह घर के सभी लोगों का सम्मान और आदर करती थी परंतु उसकी राय संयुक्त परिवार के बारे में अपने पति से जरा अलग थी। उसके अनुसार यदि बहुत कुछ समझौता करने पर भी परिवार के साथ निर्वाह करना मुश्किल हो तो अलग हो जाना ही बेहतर है।

एक दिन आनंदी अपने देवर के लिए मांस पका रही थी। बड़े घर की बेटी होने के कारण किफायत नहीं जानती थी इसलिए आनंदी ने हांडी का सारा घी मांस पकाने में उपयोग कर दिया जिसके कारण दाल में डालने के लिए घी नहीं बचा और इसी कारणवश देवर और भाभी में झगड़ा हो जाता है। घी की बात को लेकर लालबिहारी ने अपनी भाभी को ताना मार दिया कि जैसे उनके मायके में घी की नदियाँ बहती हैं और यही आनंदी के दुःख का कारण था क्योंकि आनंदी बड़े घर की बेटी थी उसके यहाँ किसी भी चीज की

कोई कमी नहीं थी। और कहत है ना स्त्रियां गालियों सह लेती है, मार भी सह लेती है, पर उससे मैके की निंदा नहीं सही जाती। 'आनंदी का दाल में घी न होने पर अपने देवर से कहा सुनी हो गई थी। देवर ने इतनी सी बात पर आनंदी पर खड़ाऊ फेंक मारा था। इसी बात को लेकर आनंदी की तयोरियाँ चढ़ी हुई थी और अब वह अपने पति के आने का इंतजार कर रही थी।

आनंदी से मिलने से पहले श्रीकंठ अपने भाई और पिता से मिल चुके थे और भाई ने श्रीकंठ को बताया कि आनंदी से कहें कि वे मुँह सभालकर बात करें वरना एक दिन अनर्थ हो जाएगा। पिता ने भी श्रीकंठ से कहा कि बहु को कहे कि मर्दों के मुँह नहीं लगना चाहिए।

आनंदी से जब श्रीकंठ ने झगड़े का सारा हाल जाना तो श्रीकंठ की आँख लाल हो उठी। अपने भाई द्वारा किया गया यह दुर्व्यवहार उन्हें अच्छा नहीं लगा और इन सब के कारण उन्होंने घर से अलग हो जाने का निर्णय लिया और अपने पिता को यह निर्णय सुना दिया कि अब इस घर में उनका निर्वाह नहीं हो सकता।

गाँव में कुछ कुटिल मनुष्य ऐसे भी थे जो बेनी माधव सिंह के संयुक्त परिवार और परिवार की नीतिपूर्ण गति से जलते थे उन्हें जब पता चला कि अपनी पत्नी की खातिर श्रीकंठ अपने पिता से लड़ने चला है तो कोई हुक्का पीने कोई लगान की रसीद दिखाने के बहाने बेनी माधव सिंह के घर जमा होने लगे।

श्रीकंठ क्रोधित होने के कारण अपने पिता से सबके सामने लड़ पड़ते हैं। पिता नहीं चाहते थे कि घर की बात बाहर वालों को पता चले परंतु श्रीकंठ अनुभवी पिता की बाते नहीं समझ पाता और लोगों के सामने ही पिता से बहस करने लगता है।

लालबिहारी को जब यह पता चलता है कि उसके भाई उसका मुँह भी देखना नहीं चाहते तो उसे बड़ा दुःख पहुँचता है उसे अपनी गलती का अहसास हो चुका था। बड़े भाई ने जब यह कहा कि वे उसका मुँह भी नहीं देखना चाहते यह बात वह सहन न कर पाया और आनंदी के सामने घर छोड़ने की बात करने लगता है। अपने देवर के घर छोड़ने की बात पर आनंदी भी व्यथित हो उठती है अपने किए पर पश्चाताप करने लगी। वह स्वयं आगे बढ़कर अपने देवर को रोक कर दोनों भाइयों में सुलह करवा देती है। आनंदी की इस समझदारी पर बेनीमाधव पुलकित हो बोल उठते हैं कि बड़े घर की बेटियाँ ऐसी ही होती हैं बिगड़ता हुआ काम भी बना लेती है। इस घटना को जिसने भी सुना वे सब आनंदी की उदारता को सराहने लगते हैं।

I. एक शब्द या वाक्य में उतर लिखिए।

1. ठाकुर साहब के कितने बेटे थे?

Ans. दो बेटे

2. बेनीमाधव सिंह अपनी आधी से अधिक संपत्ति किसे भेंट के रूप में दे चुके थे?

Ans. वकीलों को भेंट कर चुके थे।

3. ठाकुर साहब के बड़े बेटे का नाम क्या था?

Ans. श्रीकंठ

4. श्रीकंठ कब घर आया करते थे?

Ans. शनिवार

5. आनंदी के पिता का नाम लिखिए।

Ans. भूपसिंह

6. थाली उठाकर किसने पलट दी?

Ans. लालबिहारी

7. गौरीपुर गांव के जमींदार कौन थे?

Ans. बेनी माधव सिंह

8. किसकी आंखें लाल हो गई थीं?

Ans. श्रीकंठ

9. बिगड़ता हुआ काम कौन बना लेती है?

Ans. बड़े घर की बेटी

10. बड़े घर की बेटी कहानी के लेखक कौन हैं?

Ans. प्रेमचंद

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए

1. बेनीमाधव सिंह के परिवार का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

Ans. बेनीमाधव सिंह का जन्म एक संपन्न परिवार में हुआ था। वह गौरीपुर गांव के जमींदार और नंबरदार थे। वे अपनी आधी से अधिक संपत्ति वकीलों को भेंट कर चुके थे। उनकी वर्तमान आय एक हजार रुपए वार्षिक से अधिक नहीं थी। ठाकुर साहब के दो बेटे थे। बड़े का नाम श्रीकंठ सिंह था। श्रीकंठ ने कड़े परिश्रम से बी.ए. की डिग्री हासिल कर ली थी और अब एक दफ्तर में नौकरी कर रहे थे। श्रीकंठ सिंह का विवाह आनंदी से हो गया। ठाकुर साहब के छोटे बेटे का नाम लालबिहारी सिंह था। लालबिहारी सिंह दोहरे बदन का सजीला जवान था।

2. आनंदी ने अपनी ससुराल में क्या रंग ढंग देखा?

Ans. आनंदी एक बड़े उच्च कुल की लड़की थी। आनंदी के पिता भूपसिंह ने उसका विवाह श्रीकंठ सिंह से कर दिया। आनंदी अपनी ससुराल में आई तो उसने वहां का रंग ढंग कुछ और ही देखा। उसे जिस शान शौकत की बचपन से आदत पड़ी हुई थी, वह यहां नाम मात्र को भी नहीं था। हाथी-घोड़ों की बात दूर कोई सजी हुई बहली तक नहीं थी। मकान में खिड़कियां तक नहीं थी, न ज़मीन पर फर्श न दीवार

पर तस्वीरें। यह एक सीधा-सादा देहाती गृहस्थ का मकान था किंतु आनंदी ने थोड़े ही दिनों में अपने आप को इस नई अवस्था के अनुकूल बना लिया।

3. लालबिहारी आनंदी पर क्यों बिगड़ पड़ा?

Ans. एक दोपहर लालबिहारी सिंह दो चिड़िया ले आया आनंदी से पकाने के लिए कहा। अब आनंदी को नया व्यंजन बनाना पड़ा। उसने हांडी में देखा घी पाव भर से अधिक ना था उसने सारा घी मांस बनाने में लगा दिया। लालबिहारी खाना खाने बैठा तो दाल में घी नहीं था। उसने आनंदी से पूछा कि दाल में घी क्यों नहीं है? आनंदी ने उसे बताया कि सारा घी मांस में डाल दिया। इस पर लालबिहारी ने कहा कि अभी परसों घी आया, इतनी जल्दी खत्म हो गया। मैके में तो चाहे घी की नदियां बहती हो। तब आनंदी ने कहा हमारे घर में इतनी घी तो रोज नाई कहार खा जाते हैं। लाल बिहारी यह सुनकर जल गया और अपने खाने की थाली पलट दी और आनंदी पर खड़ाऊ फेंक मारी।

4. आनंदी बिगड़ता हुआ काम कैसे बना लेती है?

Ans. लाल बिहारी को अपने किए पर पछतावा हो रहा था। वह आनंदी के पास आकर बोला कि भाभी भैया ने निश्चय किया है कि वह अब मेरे साथ इस घर में न रहेंगे। अब वह मेरा मुंह तक देखना नहीं चाहते, इसलिए अब मैं जाता हूं। उन्हें फिर कभी मुंह न दिखाऊंगा। मुझसे जो कुछ अपराध हुआ वह क्षमा करना यह कहकर लाल बिहारी घर छोड़कर जाने को तत्पर हुआ। यह सुनकर आनंदी का दिल पसीजा और उसने श्रीकंठ से लालबिहारी को रोकने लिए कहा। लेकिन श्रीकंठ ने नहीं रोका। तब आनंदी ने स्वयं उठकर लालबिहारी का हाथ पकड़ा और उसे घर न छोड़ने की सौगंध की। यह देखकर श्रीकंठ का हृदय भी पसीजा और उन्होंने बाहर आकर लालबिहारी को गले लगा लिया। दोनों भाई फूट-फूट कर रोने लगे। इस प्रकार आनंदी ने बिगड़ते हुए काम को बना दिया।

5. आनंदी का चरित्र चित्रण कीजिए।

Ans. आनंदी एक उच्च कुल की लड़की थी। उसका विवाह एक पढ़े लिखे नौजवान श्रीकंठ से हुआ। आनंदी एक स्वाभिमानी लड़की थी। जब उसके देवर लालबिहारी ने उसके मैके की बुराई करी तो आनंदी भड़क उठी। इस झगड़े के फलस्वरूप आनंदी के पति श्रीकंठ सिंह ने अलग घर में रहने का फैसला किया। लेकिन जब आनंदी ने देखा कि उसके कारण घर बिखरने लगा तो उसने अपने देवर लालबिहारी को घर से बाहर जाने से रोक लिया। इस प्रकार दोनों भाइयों के बीच का मनमुटाव दूर हो गया और आनंदी ने टूटते परिवार को बचा लिया। तब बेनीमाधव सिंह ने कहा कि ' बड़े घर की लड़कियां ऐसी ही होती है जो बिगड़ता काम बना लेती है।'

III. निम्नलिखित वाक्य किसने किससे कहे?

1. जल्दी से पका दो, मुझे भूख लगी है।

Ans. लालबिहारी सिंह ने आनंदी से कहा।

2. जिसके गुमान पर भूली हो, उसे भी देखूंगा और तुम्हें भी।

Ans. लालबिहारी सिंह ने आनंदी से कहा।

3. बुद्धिमान लोग मूर्खों की बातों पर ध्यान नहीं देते।

Ans. बेनीमाधव सिंह ने श्रीकंठ से कहा।

4. लाल बिहारी को मैं अब अपना भाई नहीं समझता।

Ans. श्रीकंठ ने पिता बेनीमाधव सिंह से कहा।

5. अब मेरा मुंह नहीं देखना चाहते इसलिए अब मैं जाता हूँ।

Ans. लालबिहारी सिंह ने आनंदी से कहा।

6. भैया अब कभी न कहना कि तुम्हारा मुंह न देखूंगा।

Ans. लालबिहारी सिंह ने श्रीकंठ से कहा।

7. मुझसे जो कुछ अपराध हुआ, क्षमा करना।

Ans. लालबिहारी सिंह ने आनंदी से कहा।

IV. संदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए।

1. अभी परसों घी आया है। इतना जल्दी उठ गया।

Ans. पाठ का नाम:- बड़े घर की बेटी

लेखक:- प्रेमचंद

व्याख्या- एक दोपहर लालबिहारी सिंह दो चिड़िया लेकर घर आया और उसने आनंदी से उनको पकाने के लिए कहा। हांडी में लगभग पांच भर घी था। आनंदी ने सारा घी मांस पकाने में लगा दिया। जब लालबिहारी खाना खाने बैठा तो दाल में घी नहीं था। लालबिहारी ने आनंदी से पूछा कि दाल में घी क्यों नहीं डाला। लालबिहारी ने आनंदी से कहा कि अभी परसों घी आया था इतनी जल्दी खत्म कैसे हो गया।

2. स्त्री गालियां सह लेती है, मार भी सह लेती है, पर मैके की निंदा उनसे नहीं सही जाती।

Ans. पाठ का नाम :- बड़े घर की बेटी

लेखक:- प्रेमचंद

लाल बिहारी खाना खाने बैठता है तो दाल में घी नहीं था। वह आनंदी से पूछता है कि दाल में घी क्यों नहीं डाला। आनंदी उसे बताती हैं कि सारा घी मांस बनाने में लग गया। इस पर लाल बिहारी क्रोधित हो जाता है और आनंदी को बुरा-भला कहने लगता है। लालबिहारी आनंदी से कहता है कि उसके मैके में घी की नदियां बहती है क्या? अपने मैके की बुराई सुनकर आनंदी भडक उठती है।

3. पर तुमने आजकल घर में यह क्या उपद्रव मचा रखा है?

Ans. पाठ का नाम :- बड़े घर की बेटी

लेखक:- प्रेमचंद

श्रीकंठ शनिवार को घर आया करते थे। उन्हें नहीं मालूम था कि दो दिन पहले उनकी पत्नी आनंदी और उनके छोटे भाई लालबिहारी में झगड़ा हो चुका है।

लालबिहारी ने श्रीकंठ से आनंदी के बारे में शिकायत की और उनसे कहा कि वे आनंदी को समझा दे कि मुंह संभालकर बात करें नहीं तो अनर्थ हो जाएगा। बेनीमाधव सिंह ने भी लालबिहारी का पक्ष लिया। श्रीकंठ खा पीकर आनंदी के पास गए। आनंदी पहले से ही भरी बैठी थी। आनंदी ने श्रीकंठ से उनके चित्त के बारे में पूछा। श्रीकंठ ने कहा कि उनका चित्त तो प्रसन्न है लेकिन उसने आजकल घर में क्या उपद्रव मचा रखा है।

4. उससे जो कुछ भूल हुई उसे तुम बड़े होकर छमा करो।

Ans. पाठ का नाम:- बड़े घर की बेटी

लेखक:- प्रेमचंद

पिता बेनी माधव सिंह ने अपने बड़े पुत्र श्रीकंठ से कहा।

श्रीकंठ शनिवार घर आया तो उसे पता चला कि गुरुवार के दिन एक छोटी सी बात को लेकर पत्नी व देवर के बीच बड़ा सा मनमुटाव हो गया था। गुस्से में लालबिहारी ने आनंदी पर खड़ाऊं फेंक दिया था। अपने छोटे भाई के उद्दंड व्यवहार सुनकर श्रीकंठ उसके प्रति अत्यंत रुष्ट हो चला था। उसने अपने पिता से जाकर कहा कि या तो वह रहेगा या उसके छोटे भाई। अब वह अपने छोटे भाई के चेहरे तक नहीं देखना चाहता है। यह सुनकर पिता ने उपरोक्त वाक्य अपने बेटे श्रीकंठ को कहता है।

5. बड़े घर की बेटियां ऐसी ही होती हैं। बिगड़ता हुआ काम बना लेती हैं।

Ans. पाठ का नाम:- बड़े घर की बेटी

लेखक:- प्रेमचंद

पिता बेनीमाधव सिंह ने अपने पुत्रों के समक्ष यह वाक्य कहा।

लालबिहारी घर छोड़ने का निर्णय लिया। अपनी भाभी से सच्चे दिल से क्षमा याचना की। अपने किए पर शर्मिंदगी व्यक्त की। उसके इस व्यवहार से आनंदी का मन पसीजा उठा तथा घर छोड़कर जाने वाले देवर को रोक लिया। फिर से भाइयों में प्रेम उभरने लगा। यह सब देखकर पिता ने अपनी बहू की प्रशंसा करते हुए यह वाक्य कहा।

रीड की हड्डी

- जादीश चंद्र माथुर

"रीड की हड्डी" के लेखक जगदीश चंद्र माथुर जी हैं। यह एक एकांकी (छोटा नाटक) है जो शादी ब्याह तय करने से पहले "लड़की दिखने की" सामाजिक समस्या पर आधारित हैं। लेखक ने इस नाटक के माध्यम से यह बताने की कोशिश की है कि हम चाहे कितना भी पढ़-लिख जाय, कितने भी आधुनिक क्यों ना हो जाए, लेकिन महिलाओं के प्रति हमारी सोच नहीं बदली है। और न ही हम अपनी संकीर्ण मानसिकता से ऊपर उठ पाए हैं। लेखक ने इस पाठ के माध्यम से स्त्री शिक्षा के महत्व को भी समझाया हैं।

हमारे समाज में विवाह जैसी पवित्र परम्परा का भी व्यवसायीकरण हो गया है। लोग शादी विवाह के वक्त लड़की के माता-पिता से दहेज के रूप में धन, वाहन और अन्य घरेलू वस्तुओं को मांगने में जरा भी नहीं हिचकते हैं। पता नहीं उनको ऐसा क्यों लगता है कि जैसे वो अपने लड़के की शादी उस लड़की से कर उसके माता-पिता पर एहसान कर रहे हैं।

लाख बुराइयों के बाद भी लड़के को खरा सोना और सर्वगुण संपन्न व पढ़ी-लिखी होने के बावजूद भी लड़की को कमतर ही आँका जाता है। दहेज समस्या की वजह से ही आज हमारे देश कन्या भ्रूण हत्या जैसे जघन्य अपराध बढ़ रहे हैं। इस कहानी में लेखक ने भी बस यही समझाने की कोशिश की है।

रीड की हड्डी का सारांश

"रीड की हड्डी" कहानी की शुरुआत कुछ इस तरह से होती है। उमा एक पढ़ीलिखी शादी के योग्य लड़की हैं जिसके पिता रामस्वरूप उसकी शादी के लिए चिंतित हैं। और आज उनके घर लड़के वाले (यानि बाबू गोपाल प्रसाद जो पेशे से वकील हैं और उनका लड़का शंकर जो बी.एस.सी करने के बाद मेडिकल की पढ़ाई कर रहा हैं।) उमा को देखने आ रहे हैं।

रामस्वरूप की बेटी उमा को देखने के लिए आज लड़के वाले आ रहे हैं। इसीलिए रामस्वरूप अपने नौकर रतन के साथ अपने घर के बैठक वाले कमरे को सजा रहे हैं। उन्होंने बैठक में एक तख्त (चार पाई) रख कर उसमें एक नया चादर बिछाया। फिर उमा के कमरे से हारमोनियम और सितार ला कर उसके ऊपर सजा दिया।

रामस्वरूप जमीन में एक नई दरी और टेबल में नया मेजपोश बिछाकर उसके ऊपर गुलदस्ते सजाकर कमरे को आकर्षक रूप देने की कोशिश करते हैं। तभी रामस्वरूप की पत्नी प्रेमा आकर कहती है कि उमा मुंह फुला कर (नाराज होना) बैठी है। इस पर रामस्वरूप अपनी पत्नी प्रेमा से कहते हैं कि वह उमा को समझाएं क्योंकि बड़ी मुश्किल से उन्हें एक रिश्ता मिला है। इसलिए वह अच्छे से तैयार होकर लड़के वालों के सामने आए।

उमा के पिता किसी भी कीमत पर इस रिश्ते को हाथ से नहीं जाने देना चाहते हैं।

लेकिन प्रेमा कहती है कि उसने उमा को बहुत समझाया है लेकिन वह मान नहीं रहीं हैं।

उसके बाद प्रेमा रामस्वरूप पर दोषरोपण करते हुए कहती हैं कि यह सब तुम्हारे ज्यादा पढ़ाने लिखाने का नतीजा है। अगर उमा को सिर्फ बारहवीं तक ही पढ़ाया होता तो, आज वह कंट्रोल में रहती। रामस्वरूप अपनी पत्नी प्रेमा से कहते हैं कि वह उमा की शिक्षा की सच्चाई लड़के वालों को न बताये। दरहसल उमा BA पास है। और लड़के वालों को ज्यादा पढ़ी लिखी लड़की नहीं चाहिए। इसीलिए रामस्वरूप ने लड़के वालों से झूठ बोला है कि लड़की सिर्फ दसवीं पास है।

प्रेमा की बातें सुनकर रामस्वरूप थोड़ा चिंतित होते हैं क्योंकि वो जानते हैं कि आजकल शादी ब्याह के वक्त लड़की के साज श्रृंगार का क्या महत्व है। लेकिन वह अपनी पत्नी से कहते हैं कि कोई बात नहीं, वह वैसे ही सुंदर हैं।

लड़के वालों के नाश्ते के लिए मिठाई, नमकीन, फल, चाय, टोस्ट का प्रबंध किया गया है। लेकिन टोस्ट में लगाने के लिए मक्खन खत्म हो चुका है। इसीलिए रामस्वरूप अपने नौकर को मक्खन लेने के लिए बाजार भेजते हैं। बाजार जाते वक्त नौकर को घर की तरफ आते मेहमान दिख जाते हैं जिनकी खबर वह अपने मालिक को देता है।

ठीक उसी समय बाबू गोपाल प्रसाद अपने लड़के शंकर के साथ रामस्वरूप के घर में दाखिल होते हैं। लेकिन गोपाल प्रसाद की आंखों में चतुराई साफ झलकती हैं। और आवाज से ही वो, बेहद अनुभवी और फितरती (चालाकी) इंसान दिखाई देते हैं। उनके लड़के शंकर की आवाज एकदम पतली और खिसियाहट (खीझना, खफा होना) भरी है जबकि उसकी कमर झुकी हुई है।

रामस्वरूप ने मेहमानों का स्वागत किया और औपचारिक बातें शुरू कर दी। बातों-बातों में दोनों नये जमाने और अपने ज़माने (समय) की तुलना करने लगते हैं।

थोड़ी देर बाद रामस्वरूप चाय नाश्ता लेने अंदर जाते हैं। रामस्वरूप के अंदर जाते ही गोपाल बाबू रामस्वरूप की हैसियत आंकने की कोशिश करने लगते हैं। वह अपने बेटे को भी डांटते हैं जो इधर-उधर झांक रहा था। वह उससे सीधी कमर कर बैठने को कहते हैं।

इतने में रामस्वरूप दोनों के लिए चाय नाश्ता लेकर आते हैं। थोड़ी देर बात करने के बाद बाबू गोपाल प्रसाद असल मुद्दे यानि शादी विवाह के बारे में बात करना शुरू कर देते हैं।

जन्मपत्रिका मिलाने की बात पर गोपाल प्रसाद कहते हैं कि उन्होंने दोनों जन्मपत्रिकाओं को भगवान के चरणों में रख दिया। बातों-बातों में वो अपनी संकीर्ण मानसिकता का परिचय देते हुए कहते हैं कि लोग उनसे कहते हैं कि उन्होंने लड़कों को उच्च शिक्षा दी है। इसीलिए उन्हें बहुएं भी ग्रेजुएट लानी चाहिए।

लेकिन मैं उनको कहता हूँ कि लड़कों का पढ़-लिख कर काबिल होना तो ठीक है लेकिन लड़कियां अगर ज्यादा पढ़ लिख जाएं और अंग्रेजी अखबार पढ़कर पॉलिटिक्स

करने लग जाए तो, घर गृहस्थी कैसे चलेगी। वो आगे कहते हैं कि मुझे बहुओं से नौकरी नहीं करानी है। फिर वो रामस्वरूप से लड़की (उमा) की सुंदरता व अन्य चीजों के बारे में पूछते हैं। रामस्वरूप कहते हैं कि आप खुद ही देख लीजिए।

इसके बाद रामस्वरूप उमा को बुलाते हैं। उमा एक प्लेट में पान लेकर आती है। उमा की आँख पर लगे चश्मे को देखकर गोपाल प्रसाद और शंकर दोनों एक साथ चश्मे के बारे में पूछते हैं। लेकिन रामस्वरूप झूठा कारण बता कर उन्हें संतुष्ट कर देते हैं।

गोपाल प्रसाद उमा से गाने बजाने के संबंध में पूछते हैं तो उमा मीरा का एक सुंदर गीत गाती है। उसके बाद वो पेंटिंग, सिलाई, कढ़ाई आदि के बारे में भी पूछते हैं। उमा को यह सब अच्छा नहीं लगता है। इसलिए वह कोई उत्तर नहीं देती है। यह बात गोपाल प्रसाद को खटकती है। वो उमा से प्रश्नों के जवाब देने को कहते हैं। रामस्वरूप भी उमा से जवाब देने के लिए कहते हैं।

तब उमा अपनी धीमी मगर मजबूत आवाज में कहती है कि क्या दुकान में मेज-कुर्सी बेचते वक्त उनकी पसंद-नापसंद पूछी जाती है। दुकानदार ग्राहक को सीधे कुर्सी मेज दिखा देता है और मोल भाव तय करने लग जाता है। ठीक उसी तरह ये महाशय भी, किसी खरीददार के जैसे मुझे एक सामान की तरह देख-परख रहे हैं। रामस्वरूप उसे टोकते हैं और गोपाल प्रसाद नाराज होने लगते हैं।

लेकिन उमा अपनी बात जारी रखते हुए कहती हैं कि पिताजी आप मुझे कहने दीजिए। ये जो सज्जन मुझे खरीदने आये हैं जरा उनसे पूछिए क्या लड़कियों के दिल नहीं होते हैं, क्या उन्हें चोट नहीं लगती है। गोपाल प्रसाद गुस्से में आ जाते हैं और कहते हैं कि क्या उन्हें यहाँ बेइज्जती करने के लिए बुलाया है।

उमा जवाब देते हुए कहती हैं कि आप इतनी देर से मेरे बारे में इतनी जांच पड़ताल कर रहे हैं। क्या यह हमारी बेइज्जती नहीं है। साथ में ही वह लड़कियों की तुलना बेबस भेड़ बकरियों से करते हुए कहती है कि उन्हें शादी से पहले ऐसे जांचा परखा जाता है जैसे कोई कसाई भेड़-बकरियों खरीदने से पहले उन्हें अच्छी तरह से जाँचता परखता है।

वह उनके लड़के शंकर के बारे में बताती हैं कि किस तरह पिछली फरवरी में उसे लड़कियों के हॉस्टल से बेइज्जत कर भगाया गया था। तब गोपाल प्रसाद आश्चर्य से पूछते हैं क्या तुम कॉलेज में पढ़ी हो। उमा जवाब देते हुए कहती हैं कि उसने बी.ए पास किया है। ऐसा कर उसने कोई चोरी नहीं की। उसने पढ़ाई करते हुए अपनी मर्यादा का पूरा ध्यान रखा। उनके पुत्र की तरह कोई आवारागर्दी नहीं की।

अब शंकर व उसके पिता दोनों गुस्से में खड़े हो जाते हैं और रामस्वरूप को भला बुरा कहते हुए दरवाजे की ओर बढ़ते हैं। उमा पीछे से कहती है, जाइए.....जाइए, मगर घर जाकर यह पता अवश्य कर लेना कि आपके पुत्र की रीढ़ की हड्डी है भी कि नहीं।

गोपाल प्रसाद और शंकर वहां से चले जाते हैं। उनको जाता देख रामस्वरूप निराश हो जाते हैं। पिता को निराश-हताश देख उमा अपने कमरे में जाकर रोने लग जाती हैं। तभी नौकर मक्खन लेकर आता है। और कहानी खत्म हो जाती है।

"रीड की हड्डी" शीर्षक की सार्थकता

"रीड की हड्डी" इंसान के शरीर का मुख्य हिस्सा होती है जिसमें इंसान का पूरा शरीर टिका रहता है और संतुलित भी रहता है। ऐसे ही इंसान का आत्मविश्वास व स्वाभिमान भी होता है जिसमें उसके जीवन की नींव मजबूती से टिकी रहती है। हमारे समाज में कुछ पुराने रीति रिवाज व परंपराएं भी हैं। जिनका समय के हिसाब से और इन्सान के भले के लिए बदलना व लचीला आवश्यक होना आवश्यक है।

ऐसी ही रूढ़िवादी परंपरा जो बरसों से हमारे देश में चली आ रही हैं। वह है लड़की देखने के नाम पर लड़की के स्वाभिमान को चोट पहुंचाना और लड़की के पिता की हैसियत को आंकना आदि।

लेखक ने कहानी की नायिका उमा को पढ़ी-लिखी और स्वाभिमानी लड़की के रूप में दिखाया है। वह अपने सम्मान के साथ समझौता नहीं करना चाहती हैं। और उसने जो भी किया वह उसके भविष्य के लिए न्यायोचित भी हैं।

जबकि शंकर पढ़ा लिखा लड़का होने के बावजूद भी अपने पिता की संकीर्ण मानसिकता में उनका साथ देता है और चुपचाप बैठ कर तमाशा देखता रहता है। उमा के गुणों के आगे शंकर कहीं नहीं ठहरता हैं। फिर भी गोपाल प्रसाद अपने पुत्र के दोषों को ना देख कर उसकी सराहना करता है। और उमा के दोषों को ढूंढने की कोशिश करता हैं।

इस एकांकी का क्या उद्देश्य है? लिखिए।

उत्तर:

इस एकांकी का उद्देश्य समाज में औरतों की दशा को सुधारना व उनको उनके अधिकारों के प्रति जागरूक कराना है। यह एकांकी उन लोगों की तरफ अंगुली उठाती है जो समाज में स्त्रियों को जानवरों से ज़्यादा कुछ नहीं समझते। जिनके लिए वह घर में सजाने से ज़्यादा कुछ नहीं है यह औरत को उसके व्यक्तित्व की रक्षा करने का संदेश देती है और कई सीमा तक इस उद्देश्य में सफल भी होती है।

प्रश्न-1

रामस्वरूप और गोपाल प्रसाद बात-बात पर "एक हमारा जमाना था..." कहकर अपने समय की तुलना वर्तमान समय से करते हैं। इस प्रकार की तुलना करना कहाँ तक तर्कसंगत है?

उत्तर:

इस तरह की तुलना करना बिल्कुल तर्कसंगत नहीं होता। क्योंकि समय के साथ समाज में, जलवायु में, खान-पान में सब में परिवर्तन होता रहता है। जैसे उस वक्त की वस्तुओं की गुणवत्ता हमें आज प्राप्त नहीं होती। उस समय का स्वच्छ वातावरण या जलवायु हमें आज प्राप्त नहीं होता, तो हम कैसे कल की तुलना आज से कर सकते हैं? समय परिवर्तनशील है वह सदैव एक सा नहीं रहता समय के एकवादी परंपरा जो बरसों से हमारे देश में चली आ रही हैं। वह लड़की देखने के नाम पर लड़की के स्वाभिमान को चोट पहुंचाना और लड़की के पिता की हैसियत को आदि लेखक ने कहानी की नायिका उमा को पढ़ी-लिखी और स्वाभिमानी लड़की के रूप में दिखाया है। वह अपने सम्मान के साथ

समझौता नहीं करना चाहती हैं। और उगने जो भी किया वह उसके भविष्य के लिए न्यायोचित भी हैं।

जबकि शंकर पढ़ा लिखा लड़का होने के बावजूद भी अपने पिता की संकीर्ण मानसिकता में उनका साथ देता है और चुपचाप बैठ कर तमाशा देखता रहता है। उमा के गुणों के आगे शंकर कहीं नहीं ठहरता है। फिर भी गोपाल प्रसाद अपने दोषों को ना देख कर उसकी सराहना करता है। और उमा के दोषों को ढूँढ़ने की कोशिश करता है।

प्रश्न-2

रामस्वरूप और गोपाल प्रसाद बात-बात पर "एक हमारा जमाना था..." कहकर अपने समय की तुलना वर्तमान समय से करते हैं। इस प्रकार की तुलना करना कहाँ तक तर्कसंगत है?

उत्तर:

इस तरह की तुलना करना बिल्कुल तर्कसंगत नहीं होता। क्योंकि समय के साथ समाज में, जलवायु में, खान-पान में सब में परिवर्तन होता रहता है। जैसे उस वक्त की वस्तुओं की गुणवत्ता हमें आज प्राप्त नहीं होती। उस समय का स्वच्छ वातावरण या जलवायु हमें आज प्राप्त नहीं होता, तो हम कैसे कल की तुलना आज से कर सकते हैं? समय परिवर्तनशील है वह सदैव एक सा नहीं रहता समय के साथ हुए बदलाव को स्वीकार करने में ही भलाई है न कि उसकी तुलना बीते हुए कल से करने में।

प्रश्न- 3:

रामस्वरूप का अपनी बेटी को उच्च शिक्षा दिलवाना और विवाह के लिए छिपाना, यह विरोधाभास उनकी किस विवशता को उजागर करता है? हुए बदलाव को स्वीकार करने में ही भलाई है न कि उसकी तुलना बीते हुए कल से करने में।

उत्तर:

एक अंक प्रश्न

1. रामस्वरूप की बेटी का नाम क्या था?
उमा
2. उमा की मां का नाम क्या था?
प्रेमा
3. शंकर के पिता का नाम क्या था?
गोपाल प्रसाद
4. रामस्वरूप के नौकर का नाम क्या था?
रतन

5. प्रेमा कौन-सी किताब पढ़ ली थी?
स्त्री सुबोधिनी
6. रतन क्या लाने बाजार गया था?
मक्खन (टोस्ट में लगाने के लिए)
7. गोपाल प्रसाद क्या काम करते थे?
वकील थे
8. रामस्वरूप कैसी बहू चाहते हैं?
ज्यादा पढ़ी-लिखी न हो, मैट्रिक पास बहुत चाहते थे।
9. रामस्वरूप का बेटा शंकर क्या पढ़ रहा था?
बी. एस. सी. के बाद लखनऊ में मेडिकल कर रहा था।
10. गोपाल प्रसाद के अनुसार सरकार की आमदनी कैसी बढ़ेगी?
औरतों की 'खूबसूरती स्टैंडर्ड' के अनुसार टैक्स तय करने से।
11. गोपाल प्रसाद ने कहां तक पढ़ी हुई बहू को चाहते थे?
मैट्रिक पास
11. कौन सी तश्तरी हाथ में लिए उमा बाहर आती है?
पान की तश्तरी
12. उमा को चश्मा क्यों लगाना पड़ा?
आंखें दुखने के कारण
14. उमा कौन सा गाना गाती है?
मीरा का मशहूर गीत मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरा न कोई
15. उमा कौन सी तस्वीर खींची हैं?
कुत्ते वाली तस्वीर
16. तस्वीर कहां टंगी हुई थी?
दीवार पर
17. शंकर को कहां से भगाया गया था?
लड़कियों के हॉस्टल के इर्द-गिर्द घूमने समय भगाया गया था।
18. उमा कहां तक पढ़ी थी?
बी.ए. तक

19. शंकर के पिता का नाम लिखिए?

गोपाल प्रसाद

20. शंकर लखनऊ के किस कॉलेज में पढ़ता था?

लखनऊ के मेडिकल कॉलेज में।

गप-शप

- नामवर सिंह

गप-शप निबंध नामवर सिंह ने लिखा है। निबंध की शुरुआत गोष्ठी की निरर्थक तथा लोगों की व्यर्थ की बातों के कटु अनुभव से होती है।

लेखक को लगता है कि आज का दिन निरर्थक ही बीत गया। लेकिन एकाएक उसे नया सत्य सूझने लगता है। वह इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि आदमी का भीतरी चरित्र व्यर्थ की बातों से ही उजागर होता है। आदमी का सच्चा रूप तो उसकी बेकार की ही बातों में खुलता है। नियमित और विवेकपूर्ण बातों से तो उसका बनावट या ऊपरी रूप दिखाई पड़ता है। भाषण से उसकी बुद्धि और वक्तृता-शक्ति का पता चलता है। असली आदमी कहीं भीतर ढका रहता है।

काम की बातों से काम का पता चलता है, आदमी का नहीं। आदमी का पता तो बेकार की बातों से चलता है। आदमी की असली और छिपी मनोवृत्तियां तो तभी खुलती है।

सार्थक शब्द तो सामाजिक परंपरा के नपे-तुले ढांचे हैं। निरर्थक शब्दों से ही उसकी मौलिकता और वास्तविकता का पता चलता है। क्या कभी आपने दो प्रेमियों की बातें सुनी है? क्या उस भावावेश में कोई वाक्य या शब्द ठीक-ठिकाने से सार्थक निकलता है? उस समय हृदय बोलता है और हृदय की भाषा प्रायः निरर्थक होती है। सार्थक भाषा तो बुद्धि की होती है।

काम के लिए पत्र तो सब लिखते हैं। दफ्तरी चिट्ठियां रोज लिखी जा रही है, लेकिन काम का पत्र लिखने से शायद ही किसी को तृप्त होती है। कुछ पत्र आदमी यों ही लिखना चाहता है अथवा लिख जाता है, जिसका न तो कोई उद्देश्य होता है, न अभिप्राय और प्रयोजन। ऐसे निष्प्रयोजन पत्र का कोई उत्तर भी नहीं हो सकता। ऐसे ही बेकार पत्रों से आदमी, आदमी उतरता है, आदमी खिलता है, आदमी खुलता है।

इसी तरह पाठ्यक्रम की पुस्तकें देखकर किसी विद्यार्थी का वास्तविक रूप नहीं जाना जा सकता। इससे अधिक से अधिक यही पता चल सकता है कि उसका ध्यान पाठ्य पुस्तकों के संग्रह की घोर कितना है। परंतु उसका भीतर रूप तो उन पुस्तकों के संग्रह से मालूम होता है कि जिन्हें पाठ्यक्रम की दृष्टि से बेकार कहा जाएगा। नियमों की सीमा से चलते हुए आदमी नहीं पहचाना जाता, नियमों को तोड़ने पर पहचाना जाता है। इसलिए विद्यार्थी जीवन में सभी विद्यार्थी आदमी के रूप में बहुत कुछ एक-से लगते हैं, परंतु उन ढांचों (framework) से बाहर निकलते ही अलग हो जाते हैं।

यही हालत है बेकार सर्च की। अगर कोई विद्यार्थी कॉलेज की फीस जमा कर आता है या पाठ्य पुस्तक खरीद लेता है तो उस खर्च से उसका कुछ पता नहीं चलता। मेस के बंधे मासिक खर्च से किसी की जीभ का रहस्य नहीं खुलता। रहस्य खुलता है अकेले जलपान से, निष्प्रयोजन, योजनाहीन, आकस्मिक व्यय से पहचाना जाता है।

बहुत-से लोग 'टाइम टेबुल' बनाकर काम करते हैं। पर उससे उनकी नियमितता से सिवा कुछ नहीं मालूम होता। खुलते हैं वे उस समय जब अपने 'टाइम टेबुल' का बंधन तोड़ते हैं।

किसी समाज का पता उसके धनाढ्य व्यापारियों, सरकारी अधिकारियों तथा कर्मचारियों को देखकर उतना नहीं चलता, जितना उसके बेकार आदमियों को देखकर। बेकार घूमने वाले आदमी ही किसी समाज की व्यवस्था का सच्चा हाल प्रकट करते हैं।

निरर्थकता में भी सार्थकता की तलाश करनेवाला यह निबंध अत्यंत रोचक एवं प्रेरक है। संसार में हम बहुत सी चीजों को बेकार समझते हैं। वास्तव में उनमें भी कुछ न कुछ तत्व निहित है, लेकिन हमारे पास उन्हें बरखने तथा समझने की दृष्टि होनी चाहिए।

एक वाक्य में उत्तर लिखिए।

1. आदमी का पता कब चलता है?
बेकाम की बातों से
2. काम का पता कब चलता है?
काम की बातों से काम का पता चलता है।
3. आदमी का सच्चा रूप कब खुलता है?
उसकी बेकार की बातों से
4. किसी का चरित्र कब खुलता है?
बेकार की बातों से
5. कौन आजीवन दो रहते हुए भी एक रहने का व्रत लेते हैं?
शब्द और अर्थ
6. भाषण से किस शक्ति का पता चलता है?
भाषण से आदमी की बुद्धि और वक्तृता शक्ति का पता चलता है।
7. निरर्थक शब्दों से क्या पता चलता है?
निरर्थक शब्दों से आदमी की मौलिकता और वास्तविकता का पता चलता है।
8. सामाजिक परंपरा के नपे-तुले ढांचे कौन है?
सार्थक शब्द
9. हृदय की भाषा कैसी होती है?
हृदय की भाषा प्रायः निरर्थक होती है।
10. आदमी की पहचान कब नहीं होती?
नियमों की सीमा से चलने से आदमी की पहचान नहीं होती।
11. जीभ का रहस्य कब खुलता है?
फुटकर (अकेले) जलपानों से
12. बहुत-से लोग क्या बनाकर काम करते हैं?

टाइम-टेबल बनाकर

13. कौन समाज की व्यवस्था का सच्चा हाल प्रकट करते हैं?
बेकार घूमने वाले आदमी
14. किस दशा में लेखक की कलमें शिथिल होती है?
बेकार की दशा में।
15. मकान बनाने से पहले कौन उसका रेखागणित बना लेते हैं?
ओवरसियर (सर्वेक्षक) और इंजीनियर

बहता पानी निर्मल

- सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायन 'अज्ञेय'

लेखक को बचपन से नक्शे देखने की शौक है। नक्शों के सहारे वे दूर दुनिया की सैर का मजा लेते हैं। लेखक कहते हैं कि यात्रा करने के कई तरीके हैं। एक तो यह कि आप सोच विचार कर निश्चय कर लें कि कहाँ जाना है, कब जाना है, कहाँ-कहाँ घूमना है, कितना खर्च होगा, फिर उसी के अनुसार सारी तैयारी कीजिए। दूसरा तरीका यह है कि आप योजना तो बनाइए कहीं जाने की और निकल पड़िए और कहीं। अंग्रेजी की एक कहावत के अनुसार एक कील के कारण कभी-कभी पूरे राज्य से हाथ धोना पड़ता है। ऐसा ही कुछ लेखक के साथ हुआ एक दाँत माँजने के ब्रुश और मोटर की एक मामूली-सी ढिबरी के लिए एक बार वे बड़ी मुसीबत में पड़ गए। बरसात के दिन थे रास्ता खराब था। एक दिन लेखक सबेरे घूमने निकले तो देखा कि नदी बढ़ कर सड़क के बराबर आ गयी है। वह सोनारी गाँव के डाकबंगले से दूर आ गए थे और शिवसागर से तीन-चार मील पर थे। टूथब्रश और मोटर की एक छोटी सी ढिबरी के चक्कर में उन्हें दो-तीन घंटे लग गए और जब वे वापस लौटे तो देखा कि सड़क पर पानी बड़े जोर से एक तरफ से दूसरी तरफ बह रहा था, क्योंकि सड़क के एक तरफ नदी थी, दूसरी तरफ नीची सतह के धान के खेत थे, जिनकी ओर पानी बढ़ रहा था। पानी के धक्के से सड़क कई जगह टूट गयी थी। लेखक पानी होने की वजह से पीछे भी नहीं लौट सकते थे, इसलिए आगे बढ़ता गए। पर थोड़ी देर बाद पानी कुछ और गहरा हो गया। आगे कहीं कुछ दीखता नहीं था। सड़क के दोनों ओर लगे पेड़ों पर साँप लटक रहे थे। लेखक ने लौटने का निश्चय किया, पर सड़क दिखाई नहीं दे रही थी, अन्दाज से ही वे बीच के पक्के हिस्से पर गाड़ी चला रहे थे। लेखक किसी प्रकार शिवसागर पहुँचे।

शिवसागर से सोनारी को एक दूसरी सड़क भी जाती थी चाय बागानों में से होकर यह सड़क अच्छी थी पर इसके बीच एक नदी पड़ती थी जिसे नाव पार करना होता था। लेखक ने इसी रास्ते से सोनारी जाने की सोची। लेखक इसे सड़क से नदी तक पहुँचे। नदी में नाव पर गाड़ी लाद भी ली और पार चले गए। किंतु यहाँ भी नदी में भीषण बाढ़ आयी थी। उस पार नदी का कगारा ऊँचा था, मोटर के लिए उतारी बना हुआ था। लेकिन नाव से किनारे तक जो तख्ते डाले गये थे वह ठीक नहीं लगे थे। लेखक की गाड़ी नीचे गिरी आधी पानी में आधी किनारे पर।

लेखक जोर से ब्रेक दबाये बैठे थे। आधे घण्टे तक उस स्वर्णसैनी पर बैठे रहने के बाद जैसे-तैसे मोटर ऊपर चढ़ायी जा सकी। आगे ऊँची जगह पर एक गाँव था। यहीं सोनारी से आये दो साइकिल सवारों से मालूम हुआ कि वे कन्धों तक पानी में से निकल कर आये हैं साइकिलें कन्धों पर उठाकर! और मोटर तो कदापि नहीं जा सकती। इस तरह इधर भी निराशा थी। पानी अभी बढ़ रहा था पर लेखक यहाँ कैद हो जाना नहीं चाहते थे, इसलिए फिर नाव पर मोटर चढ़ा कर उसी रास्ते नदी पार की और रात को किसी तरह शिवसागर पहुँचे। एक सज्जन ने ठहरने को जगह दी, भोजन-बिस्तर का प्रबन्ध भी हो गया पर मन ही मन लेखक ने खुद को कोसा कि न नया दाँत-ब्रुश लेने के लिए सोनारी से निकले होते, न यह मुसीबत होती। लेखक को यहाँ बारह दिन काटना पड़ा और जब डाक बंगले पर वापस पहुँचे तो देखा कि वहाँ पानी भरा हुआ था। सब कुछ भीगकर बरबाद हो गया था। यात्रा में इस तरह की कठिनाइयाँ झेलने पर भी लेखक का मानना है कि घूमते-फिरते रहना चाहिए एक जगह टिकना तो मौत है।

एक अंक प्रश्न

1. बहता पानी निर्मल पाठ का लेखक कौन है?
सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायन 'अज्ञेय'
2. बचपन से लेखक को क्या देखने का शौक था?
नक्शा
3. 'तरंगम्बाड़ी' नाम नक्शे में विकृत होकर क्या हो गया था?
त्रांकुबार
4. लेखक किस नदी की बाढ़ में फंस गए थे?
'डि-खू' नदी
5. अंग्रेजी की कहावत क्या है?
" एक कील की वजह से राज्य खो जाता है।"
6. सोनारी कहाँ है?
शिव सागर से कोई 18 मील दूर।
7. सड़क के दोनों ओर पेड़ में क्या लटक रहे थे?
साँप
8. शिव सागर में लेखक क्या-क्या खरीदना चाहते थे?
दांत ब्रश, तेल, साबुन।
9. शिवसागर में ही लेखक कितने दिन काटना पड़ा?
12 दिन
10. टिकना क्या है?
टिकना मौत है।
11. "बहता पानी निर्मल" गद्य में लेखक किस स्थान की यात्रा करने निकले थे?
सोनारी

भोलाराम

- हरिशंकर परसाई

प्रस्तुत कहानी हरिशंकर परसाई की व्यंग्य कहानी है। इसमें भोलाराम नामक व्यक्ति के लगातार पाँच वर्षों तक पेंशन हेतु संघर्ष करने का मार्मिक चित्रण है। प्रत्येक क्षेत्र में भ्रष्टाचार किस प्रकार पनप रहा है, इसका व्यंग्य शैली में वर्णन किया गया है।

यमराज लाखों वर्षों से असंख्य लोगों को कर्म और सिफारिश के आधार पर स्वर्ग और नरक भेजते आ रहे थे। आज चित्रगुप्त चश्मा पोंछे, बार-बार पन्ने पलट रजिस्टर देख रहे थे। कोई गलती नजर नहीं आ रही थी। धर्मराज से बोला रिकॉर्ड सब ठीक है, भोलाराम के जीव पांच दिन पहले देह त्यागी और यमदूत के साथ रवाना हुआ पर यहाँ नहीं पहुँचा है। यमदूत भी लापता है। बड़े चिंतित होकर सोच रहे हैं कि पांच दिन पहले जीव त्यागने वाले भोलाराम के जीव को लेकर यमदूत इस लोक में क्यों नहीं पहुँचा। तभी यमदूत आया पूछने पर जवाब दिया कि भोलाराम की देह को त्यागते ही जीव को पकड़ा और यात्रा आरंभ की पर वह जीव यमदूत को चमका दे गया। यमदूत पांच दिन से पूरा ब्रह्माण्ड छान डाला पर उस जीव का कहीं पता न चला। चित्रगुप्त कहते हैं कि पृथ्वी पर इस प्रकार का कारोबार बहुत चल रहा है। लोगों दोस्तों को कुछ भेजते तो रास्ते में रेलवे वाले उड़ा लेते हैं। राजनीतिक दलों की नेता विरोधी नेता को उड़ाकर बंद कर देता है। कहीं भोलाराम के जीव को भी किसी ने उड़ा लिया होगा। धर्मराज कहते हैं भोलाराम जैसे नगण्य, दीन आदमी से किसी को क्या लेना देना। तीनों ही बड़े चिंतित होकर सोच रहे हैं कि पांच दिन पहले जीव त्यागने वाले भोलाराम के जीव को लेकर यमदूत इस लोक में क्यों नहीं पहुँचा। धर्मराज ने कहा भोलाराम नाम के एक आदमी की पाँच दिन पहले मृत्यु हुई। इसने सारा ब्रह्माण्ड छान डाला, पर वह कहीं नहीं मिला।

उन्हें चिंतित देखकर वहाँ पहुँचे नारद जो धर्मराज से पूछते हैं कि क्या नरक में निवास स्थान की समस्या अभी हल नहीं हुई। तो धर्मराज ने कहा वह समस्या तो कभी की हल हो गयी। नरक में पिछले सालों में बड़े गुणी कारीगर आये हैं। कई इमारतों के ठेकेदार हैं, जिन्होंने पूरे पैसे लेकर रद्दी इमारतें बनायीं। बड़े-बड़े इंजीनियर भी आ गये हैं, जिन्होंने ठेकेदारों से मिलकर पंचवर्षीय योजनाओं का पैसा खाया और सियर हैं जिन्होंने उन मजदूरों की हाजिरी भर कर पैसा हड़पा, जो कभी काम पर गये ही नहीं। इन्होंने बहुत जल्दी नरक में कई इमारतें तान दी हैं। धर्मराज ने कहा भोलाराम नाम के एक आदमी की पाँच दिन पहले मृत्यु हुई। इसने सारा ब्रह्माण्ड छान डाला, पर वह कहीं नहीं मिला। नारद ने उनकी समस्या का हल ढूँढ़ने हेतु पृथ्वीतल पर जाने की योजना बनाई। चित्रगुप्त रिकॉर्ड देखकर विवरण देता है।

भोलाराम जबलपुर के घमापुर मुहल्ले का निवासी है। उम्र लगभग साठ वर्ष है। उसकी एक पत्नी दो लड़के और एक लड़की हैं। सरकारी नौकर था। पांच साल पहले रिटायर हो गया था। मकान का किराया बाकी था। मकान मालिक घर से निकालनेवाला था, इतने में भोलाराम चल बसा। पेंशन नहीं मिल रही थी। नारद भोलाराम की परिवार से मिला और भोलाराम की पत्नी से पूछते हैं कि "भोलाराम को क्या बीमारी थी?" भोलाराम की पत्नी ने नारद से कहा- "क्या बताऊँ? गरीबी की बीमारी थी। पाँच साल से

पेंशन नहीं मिली। कहीं कोई सुनता ही नहीं। घर में खाने के फाके पड़ने लगे। इन्हीं चिन्ताओं में एक दिन उन्होंने दम तोड़ दिया।- आप सिद्ध पुरुष हैं। यदि पेंशन दिलवा दो तो बच्चों का गुजारा हो जाय।"

अन्त में जब भोलाराम के पेंशन का कार्य नारद खुद संभालते हैं। नारद सरकारी दफ्तर पहुंचे तो पहले ही कमरे में उनकी एक बाबू से भेंट हुई। उन्होंने उसे भोलाराम के बारे में बताया। बाबू ने कहा कि भोलाराम ने प्रार्थना-पत्र तो भेजे थे लेकिन उनके साथ वजन यानी रिश्तत के पैसे नहीं भेजे। इसी कारण उसकी दरखास्तों पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। नारद को बाबूओ ने एक के बाद एक से घूमा दिया। तब चपरासी ने कहा कि बड़े साहब से मिलो उन्हें खुश करने से काम हो जायेगा।

नारद बड़े साहब से मिले और भोलाराम के पेंशन के बारे में कहा। नारद जी को पेंशन कार्यालय के साहब सरकारी कार्यालयों की गतिविधियों से परिचित करवा रहे हैं। जब नारद जी को साहब की बात समझ में नहीं आयी तो उन्होंने कहा कि भोलाराम ने जो गलती की वह आप न करें। यदि आप मेरा कहा मान लेंगे तो आपका कार्य पूर्ण हो जायेगा। आप इस कार्यालय को देवालय समझेंगे तभी आपको सफलता मिलेगी। जिस प्रकार ईश्वर से सम्पर्क करने के लिए व्यक्ति को मन्दिर के पुजारी के समक्ष दान-दक्षिणा देनी पड़ती है। उसी प्रकार इस कार्यालय में भी आपको अधिकारी से सहयोग करने के लिए भोलाराम की दरखास्तों पर 'वजन' रखना होगा, क्योंकि बिना वजन के दरखास्तें उड़ रही हैं। आपको यह बात मैं केवल इस कारण बता रहा हूँ कि आप भोलाराम के प्रियजन हैं। इसी कारण इन दरखास्तों पर 'वजन' रख दें। जिससे कि भोलाराम द्वारा की गयी गलती सुधर जाय। इस प्रकार नारद जी से रिश्तत देने के लिए व्यंग्य में कहा है। नारद जी उसका अभिप्राय समझ न पाये तब साहब ने नारद जी को समझाया कि इस वीणा को वे उसे दे दें। क्योंकि उनकी पुत्री गायन-वादन में निपुण है साहब ने साधु-सन्तों की प्रशंसा भी की जिससे नारद जी अपनी वीणा को साहब को दे दें।

वीणा हथियाने के लिए ही साहब ने इस प्रकार नारद जी से कहा कि साधु-सन्त वीणा का रख रखाव जानते हैं। इसके अतिरिक्त इसका प्रयोग उत्तम संगीत के लिए करते हैं। अतः इस वीणा के स्वर भी अच्छे होंगे। वजन के रूप में नारद की वीणा ही रखवा दी। तब कहीं फाइल देखी जाने लगी।

बड़े साहब ने नाम पूछा, तो नारद ने ऊँची आवाज में कहा 'भोलाराम'। सहसा फाइल से आवाज आई- "कौन पुकार रहा है मुझे? पोस्टमैन है क्या? पेंशन का आर्डर आ गया?" नारद ने कहा "क्या तुम भोलाराम के जीव हो? फाइल से आवाज आई 'हाँ' लेखक ने व्यंग्यमय भाषा में भोलाराम की दशा दिखाई है। जीवित रहते हुए तो वह पेंशन की दरखास्तों में उलझा ही था, मरने के बाद भी वह अभागा स्वर्ग जाने के बजाय उन्हीं दरखास्तों से चिपका रहना चाहता था। कैसी विडम्बना है मानव जीवन की !

सरकारी कर्मचारी और भ्रष्टाचारी अधिकारियों के कारण यह सब हुआ था। व्यंग्य शैली में बताया गया है कि भोलाराम का जीव सरकारी पेंशन फाइलों में अटका हुआ है।

कहानी के मध्य में समाज के विभिन्न क्षेत्रों में किस प्रकार से रिश्ततखोरी बढ़ती जा रही है, इसका सजीव चित्रण किया गया है। सरकारी धन कैसे भ्रष्ट अधिकारी हड़प जाते

हैं और गरीब कमजोर व्यक्ति इसका शिकार होते हैं इसका वर्णन है।

एक वाक्य में उत्तर लिखिए।

1. स्वर्ग या नरक में निवास स्थान अलाट करने वाले कौन है?

Ans: धर्मराज

2. भोलाराम के जीव ने कितने दिनों पहले देह त्यागी?

Ans: पांच दिन पहले

3. भोलाराम का जीव किसे चकमा दे गया?

Ans: यमदूत

4. यमदूत ने सारा ब्रह्मांड किसकी खोज में छान डाला?

Ans: भोलाराम की जीव की खोज के लिए

5. भोलाराम किस शहर का निवासी था?

Ans: जबलपुर

6. भोलाराम को पांच साल से क्या नहीं मिला?

Ans: पेंशन

7. नारद जी भोलाराम की पत्नी से विदा लेकर कहां पहुंचे?

Ans: सरकारी दफ्तर

8. भोलाराम ने दरखास्त पर क्या नहीं रखा था?

Ans: वज़न

9. बड़े साहब के कमरे के बाहर कौन उंघ रहा था?

Ans: चपरासी

10. बड़े साहब की लड़की क्या सीखती है?

Ans: गाना बजाना

11. नारद क्या छिनते देख घबराए?

Ans: अपनी वीणा

12. फाइल में से किसकी आवाज़ आई?

Ans: भोलाराम

II. उत्तर लिखिए

1. चित्रगुप्त ने धर्मराज से क्या कहा?

Ans: चित्रगुप्त बार-बार चश्मा पोंछ, बार बार थूक से पन्ने पलट, रजिस्टर पर रजिस्टर देख रहे थे। गलती पकड़ में नहीं आ रही थी। आखिर उन्होंने रजिस्टर खींचकर इतनी जोर से बंद किया कि मक्खी चपेट में आ गई। उसे निकालते हुए उन्होंने धर्मराज से कहा - महाराज, रिकार्ड सब ठीक है। भोलाराम नामक व्यक्ति के जीव ने पांच दिन पहले देह त्यागी और यमदूत के साथ इस लोक के लिए खाना भी हुआ पर अभी तक नहीं पहुंचा। यमदूत भी लापता है।

2. यमदूत ने हाथ जोड़कर चित्रगुप्त से क्या विनती की?

Ans: धर्मराज और चित्रगुप्त के सामने एक गंभीर समस्या आ गई थी। ऐसा कभी नहीं हुआ था। भोलाराम नामक व्यक्ति के जीव ने पांच दिन पहले देह त्यागी और यमदूत के साथ यमलोक के लिए खाना भी हुआ। पर बीच रास्ते में उसे चकमा देकर गायब हो गया। इतने में एक बदहवास यमदूत वहां आकर हाथ जोड़कर बोला- दयानिधान, मैं कैसे बताऊं कि क्या हो गया। आज तक मैंने धोखा नहीं खाया था, पर भोलाराम का जीव मुझे चकमा दे गया। पांच दिन पहले ही उसे पकड़कर इस लोके लिए सवार हुआ। लेकिन एक तीव्र वायु तरंग के कारण वह मेरी चंगुल से छूटकर न जाने कहां गायब हो गया। इन पांच दिनों में मैंने सारा ब्रह्मांड छान डाला, पर उसका कहीं पता न चला।

3. नरक में निवास स्थान की समस्या कैसे हल हुई?

Ans: धर्मराज ने बताया कि नरक में पिछले साल से बड़े-बड़े गुणी कारीगर आ गए हैं। कई इमारतों के ठेकेदार हैं जिन्होंने पूरे पैसे लेकर रद्दी इमारतें बनाईं। बड़े-बड़े इंजीनियर भी आ गए हैं, जिन्होंने ठेकेदारों से मिलकर पंचवर्षीय योजनाओं का पैसा खाया। ओवर-सीयर हैं जिन्होंने उन मजदूरों की हाजिरी भरकर पैसा हड़पा जो काम पर गए ही नहीं। उन्होंने बहुत जल्दी नरक में आ गए और कई इमारतें बनवाएं। इस तरह नरक में निवास स्थान की समस्या हल हो गई।

4. भोलाराम का परिचय दीजिए।

Ans: भोलाराम एक गरीब आदमी था। जबलपुर शहर के घमापुर मोहल्ले में नाले के किनारे एक टूटे फूटे घर में परिवार के साथ रहते थे। उसके दो बेटों के साथ एक बेटी भी थी। पांच साल पहले रिटायर हो गए, पर पेंशन नहीं मिली। अतः मकान का किराया नहीं दे पाया। मकान मालिक उसे घर से निकाल देना चाहता था। बार-बार वह पेंशन के लिए दरख्वास्त देता रहा पर जवाब नहीं आया घर का सारा सामान बिकने लगा। इस चिंता में घुलते-घुलते और भूखे मरते-मरते उसने दम तोड़ दिया।

5. भोलाराम की पत्नी ने नारद को भोलाराम के संबंध में क्या बताया?

Ans: पत्नी ने घर की खराब स्थिति के बारे में बताते हुए कहा कि वह इतने बूढ़े नहीं थे कि मौत आ जाए। उन्हें कुछ और नहीं गरीबी की बीमारी थी। अगर उन्हें समय पर पेंशन मिल जाती तो कुछ नहीं होता। उसने नारद के पूछने पर बताया कि भोलाराम बहुत सच्चरित्र आदमी था। जिंदगी भर किसी दूसरी स्त्री को आंख उठाकर नहीं देखा। उसे अपने पत्नी, बच्चों से बहुत लगाव था।

6. बड़े साहब ने नारद से दफ्तरों के रीति-रिवाज के बारे में क्या कहा?

Ans: सरकारी दफ्तर के बड़े साहब ने नारद जी से कहा- आप तो बैरागी हैं। दफ्तरों के रीति रिवाज को नहीं जानते। असल में पेंशन न मिलने में भोलाराम की ही गलती है। यह भी एक मंदिर है, जहां दान पुण्य करना पड़ता है। भोलाराम ने अपनी फाइल में वज़न नहीं रखा। सरकारी काम पैसे का मामला है, पेंशन का केस बीस दफ्तरों में जाता है। देर लग जाती है। बीसों बार एक ही बात को बार-बार लिखना पड़ता है। तब जाकर बात पक्की होती है। जितनी पेंशन मिलती है उतनी ही स्टेशनरी लग जाती है।

7. भोलाराम की पत्नी ने नारद से क्या विनती की? (2015, 2020)

Ans: भोलाराम जबलपुर शहर के घमापुर मुहल्ले में नाले के किनारे टूटे फूटे मकान में पत्नी, दो लड़के और एक लड़की के साथ रहता था। वह सरकारी नौकर था। पांच साल पहले रिटायर हो गया था। पेंशन नहीं मिला। हर दस-पंद्रह दिन में एक दरखास्त देता लेकिन अभी तक पेंशन नहीं मिला था। चिंता में घुलते-घुलते और भूखे मरते-मरते उन्होंने दम तोड़ दिया।

8. नारद आखिर भोलाराम का पता कैसे लगाते हैं?

Ans: नारद भोलाराम के घर जाकर उसके बारे में पूरी जानकारी हासिल करके सरकारी दफ्तर जाते हैं। जहां उन्हें घूस के रूप में 'वज़न' का पता चलता है। नारद के पास बड़े बाबू को देने के लिए कुछ नहीं होता तो वह उनकी वीणा ही मांग लेते हैं। कोई उपाय न देखकर नारद को अपनी वीणा ही देनी पड़ती है। वीणा मिलने के बाद बड़े बाबू फाइल निकलवाते हैं और नारद जी के सामने भोलाराम की दरखास्त खोली जाती है। उसी दरखास्त से भोलाराम की आत्मा की आवाज आती है कि 'क्या पेंशन का आर्डर आ गया।' नारद को तब पता चलता है कि उसकी आत्मा पेंशन की फाइल में है।

III. निम्नलिखित वाक्य किसने किससे कहे।

1. 'महाराज रिकॉर्ड सब ठीक है।' चित्रगुप्त ने धर्मराज से कहा।
2. 'भोलाराम का जीव कहां है?' चित्रगुप्त ने यमदूत से कहा।
3. 'महाराज मेरी सावधानी में बिल्कुल कसर नहीं थी।' यमदूत ने धर्मराज से कहा।
4. 'क्यों धर्मराज कैसे चिंतित बैठे हैं।' नारद ने धर्मराज से कहा।
5. 'इनकम होती तो टैक्स होता। भुख मरा था।' चित्रगुप्त ने नारद से कहा।
6. 'मुझे भिक्षा नहीं चाहिए, मुझे भोलाराम के बारे में कुछ पूछ-ताछ करनी है।'

नारद जी ने भोलाराम की बेटी से कहा।

7. 'गरीबी की बीमारी थी।'

भोलाराम की पत्नी ने नारद से कहा।

8. 'आप साधु है, आपको दुनियादारी समझ में नहीं आती।'

बड़े साहब ने नारद से कहा।

IV. ससंदर्भ स्पष्टीकरण दीजिए।

1. 'पर ऐसा कभी नहीं हुआ था।'

Ans: पाठ का नाम- भोलाराम का जीव

लेखक का नाम- श्री हरिशंकर परसाई जी।

इस वाक्य को चित्रगुप्त ने धर्मराज से कहते हैं।

यमलोक में बैठे धर्मराज असंख्य लोगों को उनके कर्मों के हिसाब से स्वर्ग या नरक अलॉट करते हैं। कभी कुछ गड़बड़ नहीं हुई। लेकिन ऐसा पहली बार हुआ है कि एक आत्मा पांच दिन पहले शरीर छोड़कर यमदूत के साथ यमलोक के लिए रवाना हुई और अब तक नहीं पहुंची। चित्रगुप्त स्वयं हैरान है कि ऐसा तो पहले कभी नहीं हुआ कि आत्मा बीच में ही कहीं गायब हो जाए।

2. आज तक मैंने धोखा नहीं खाया था, पर भोलाराम का जीव मुझे चकमा दे गया।

Ans: पाठ का नाम- भोलाराम का जीव

लेखक का नाम - हरिशंकर परसाई जी।

इस वाक्य को यमदूत ने चित्रगुप्त से कहा।

यमदूत बहुत ही बुरी स्थिति में धर्मराज के पास पहुंचता है तो वे उस पर चिल्ला पड़ते हैं कि भोलाराम की आत्मा कहां है ? वह हाथ जोड़ते हुए बताता है कि महाराज मैं उसे अपने साथ लेकर नगर के बाहर तक आया था मगर एक वायु तरंग पर सवार हुआ वैसे ही यह आत्मा मेरे चंगुल से छूटकर कहीं भाग गई। मैंने पूरा ब्रह्मांड छान मारा पर वह मुझे नहीं मिला। मैंने आजतक धोखा नहीं खाया पर भोलाराम का जीव मुझे चकमा दे गया।

3. इन पांच दिनों में मैंने सारा ब्रह्मांड छान मारा पर उनका पता नहीं चला।

Ans: पाठ का नाम- भोलाराम का जीव।

लेखक का नाम -श्री हरिशंकर परसाई जी।

यमदूत बहुत ही बुरी स्थिति में धर्मराज के पास पहुंचा तो उस पर चिल्ला पड़ते हैं कि भोलाराम की आत्मा कहां है ? वह हाथ जोड़ते हुए बताता है कि महाराज मैं उसे अपने साथ लेकर नगर के बाहर तक आया और वायु तरंग पर सवार हुआ वैसे ही यह आत्मा मेरे चंगुल से छूटकर कहीं भाग गई। मैंने पूरा ब्रह्मांड छान मारा , मगर मुझे नहीं मिला।

4. चिंता में घुलते हुए और भूखे मरते हुए उसने दम तोड़ दिया।

Ans: पाठ का नाम - भोलाराम का जीव

लेखक का नाम- श्री हरिशंकर परसाई जी।

नारद जी जब भोलाराम की पत्नी से भोलाराम की मृत्यु के बारे में पूछते हैं तो वह बताती है कि उन्हें कोई रोग नहीं था। रिटायर होने के बाद वे पेंशन पाने के लिए प्रयास कर रहे थे और पेंशन नहीं मिल पा रही थी। गरीबी में, घर का सारा सामान बिक गया। इसी चिंता में और भूखे रहने के कारण उनकी मौत हो गई।

5. साधु संतों की वीणा से तो और अच्छे स्वर निकलते हैं।

Ans: पाठ का नाम - भोलाराम का जीव

लेखक का नाम- श्री हरिशंकर परसाई जी।

सरकारी दफ्तर के बड़े साहब इसे नारद जी से कहते हैं।

स्पष्टीकरण - नारद जी भोलाराम के जीव को ढूँढते हुए पृथ्वी पर आए। भोलाराम की पत्नी से सारी कथा सुनकर उसकी रुकी हुई पेंशन दिलाने का प्रयत्न करने का आश्वासन देते हुए सरकारी दफ्तर में पहुंचे। एक बाबू साहब से पता चला कि भोलाराम ने दरखास्त तो भेजी थी, पर उन पर वज़न नहीं रखा था, इसलिए कहीं उड़ गई होगी। आखिर बड़े साहब से भी यही उत्तर मिलता है तो नारद वज़न का अर्थ समझ नहीं पाए। बड़े साहब नारद जी को समझाते हुए कहते हैं कि जैसे आपकी यह सुंदर वीणा है, इसका ही वज़न भोलाराम की दरखास्त पर रखा जा सकता है। मेरी लड़की गाना बजाना सीखती है। यह मैं उसे दे दूंगा। साधु संतों की वीणा से तो और अच्छे स्वर निकलते हैं। तब कहीं नारद समझ पाए।

6. पेंशन का आर्डर आ गया? (2015)

Ans: पाठ का नाम- भोलाराम का जीव

लेखक का नाम - श्री हरिशंकर परसाई जी।

स्पष्टीकरण- भोलाराम जबलपुर का निवासी था। सरकारी नौकरी कर पांच साल पहले रिटायर हुआ था। पेंशन के दफ्तर के कई बार चक्कर लगाने पर भी वज़न न देने की वजह से पेंशन नहीं मिला था। एक पत्नी, दो लड़के और एक लड़की थी। इन पांच सालों में सब जेवर बिक चुके। बर्तन भी बिक गए। लेकिन एक दिन वह इस दुनिया को छोड़ कर चला गया। भोलाराम के जीव को पकड़ने के लिए यमदूत आया लेकिन उसे चकमा देकर उसके चंगुल से छूटकर गायब हो गया। पूरा ब्रह्मांड छान डालने पर भी वह कहीं नहीं मिला। आखिर उसे ढूँढते हुए नारद 'पेंशन दफ्तर' पहुंचते हैं। अपनी वीणा को वजन के रूप में देकर भोलाराम की फाइल मांगते हैं। उसे खोलने पर फाइल के अंदर से आवाज आई- कौन पुकार रहा है मुझे ? पोस्टमैन है क्या? पेंशन का आर्डर आ गया?

रज़िया

- रामवृक्ष बेनीपुरी

रज़िया रेखाचित्र में लेखक ने अपने पास के गाँव की चुड़िहारिन जिसका नाम रज़िया था उसके बारे में लिखा है। बचपन में खेलते खाते समय उसकी भेंट रज़िया से होती है। अद्भुत वेश-भूषा तथा रूप रंगा वाली इस लड़की को देखकर लेखक उसके प्रति आकर्षित हो जाता है। लेखक उस दिन अचानक उसके गाँव में पहुँचा तो रज़िया की स्मृति ताजा हो उठी।

रज़िया की माँ गाँव में चूड़ियों की खँचिया लेकर आते। उस दिन माँ के साथ रज़िया पहली बार आयी थी। रज़िया कानों में चाँदी की बालियाँ, गले में चाँदी का हैकल, हाथों में चाँदी के कंगन और पैरों में चाँदी की गोडाई भर बाह की बूटेदार कमीज़। लेखक की मौसी ने ठेकुएँ दिये। लेखन ने उसे खाने के लिए कहा और दो तीन प्रश्न किया जवाब 'न' में गर्दन हिलाया

रज़िया इसी गाँव में रहने वाली थी। लेखक मज़ाक में भी रज़िया की सुन्दरता पर मोहित हो जाने की बात का चर्चा न करता।

लेखक पढ़ने के लिए शहर गए। रज़िया माँ के पीछे-पीछे घूमती रही और धीरे-धीरे चूड़िया पहनाने की कला में परमगत (निपुण) हो गई। लेखक और रज़िया की भेंट हो जाया करती थी। रज़िया बढ़ती गयी बच्ची से किशोरी, लेखक को देखते ही दौड़कर निकट आ जाती और अटपटे प्रश्न पूछती। कुछ दिनों बाद जब मिली तो वह सकुचा रही लेखक के निकट आने के पहले " इधर- उधर देखती और जब बातें करती तो ऐसी चौकन्नी सी कि कोई देख न ले, सुन न ले।

रज़िया की जवानी में वे अपने पेशे में निपुण हो रही थी। वह चूड़ियाँ पहनाते हुए बहुओं के पतियों से हसी ठिठोली भी करती जाती। हसन से रज़िया का विवाह हुआ। उसकी अल्हड़ता कम नहीं हुई।

लेखक शहर में रहना बढ़ गया, रज़िया से भेंट भी कम। बहुत दिनों बाद लेखक गाँव में देखा रज़िया के पीछे एक नौजवान चूड़ियों की खँची सर पर लिए है। मान लिया उसका पति है फिर भी अनजान सा पूछा इस मजूर को कहाँ से उठा लायी है रे ? उत्तर आया इसी से पूछिए, साथ लग गया तो क्या करूँ ? और बोली "यह मेरा खाविंद (पति) है मालिक। लेखक का विवाह हुआ बीबी को सुहाग की चूड़ियाँ पहनाने आयी और धूम मचायी। रज़िया अपने प्रेमकथा सुनाने लगी।

बहुत दिनों बाद लेखक और रज़िया का भेंट पटना में हो गयी। लेखक पटना सिटी में एक छोटे से अखबार में था। रज़िया सौदा-पुलक करने और साज सिंगार की कुछ चीजें लेने नये लोगों को नये चीजों की जरूरत।

रज़िया ने बातें करने लगी गाँव में हिन्दू मुसलामानों के हाथ से सौदा नहीं खरीदते। हिन्दू चुड़िहारिने है, हिन्दू दरजी है। रज़िया जैसी पेशे वालों को दिक्कत हो गयी है। रज़िया

ने कहा कि उनके गाँव में ऐसा पागलपन नहीं है और लेखक के घर में उन से ही चूड़ियाँ लेती। लेखक से पता पूछा, कहा कि अकेले नहीं, हसन के साथ ही आयेगी। दूसरे दिन रज़िया लेखक के घर के सामने लेखक के हाथों में चूड़ियाँ रखकर कहा कि बीबी को पहनने के लिए।

अब लेखक उस गाँव में पहुँचे चुनाव का चक्कर में। रज़िया का गाँव में पर नहीं पता कि रज़िया अब वहाँ रहती हैं। लेखक पूछ भी नहीं सकते कि रज़िया नामक चूड़िहारिन वहाँ है। लेखक अब नेता बनकर आया है लोग जय-जयकार कर रहे हैं तो रज़िया के बारे में पूछेंगे तो वह स्वयं चर्चा का विषय बन जाएगा। लेखक जीप से उतरकर लोगों से बातें कर रहा था। अचानक रज़िया आ रही बच्ची हो कर कानों में वे ही बालियाँ, गोरे चहरे पर वे ही नीली आँखें, वहीं भर बाँह की कमीज- लेखक को सपना लगा। बच्ची लेखक को सलाम करती और हाथ पकड़कर कहती चलिए मालिक मेरे घर। लेखक को कुछ समझ नहीं आया। तीसरे ने लेखक से कहा कि यह रज़िया की पोती है। लेखक रज़िया के घर पहुँचता है जहाँ उसका भरा पूरा परिवार है। शुभ श्वेत बालों की लटें तथा झुर्रीदार चेहरे से उसने मालिक को सलाम किया।

लेखक और रज़िया एक ही गाँव में होने के कारण लेखक रज़िया के बचपन, यौवनावस्था और बुढ़ापा का चित्रण कर सका। अत्यंत रोचक तथा सशक्त भाषा में लेखक ने रज़िया के माध्यम से जाती, सम्प्रदाय की दीवार भेदकर उद्भासित होने वाले मानवीय संबंधों का चित्र अंकित किया है।

One more summary:-

रज़िया रेखाचित्र में लेखक ने अपने पास के गाँव की चूड़िहारिन जिसका नाम रज़िया था उसके बारे में लिखा है। रज़िया से लेखक का परिचय बचपन में होता है और रज़िया के बुढ़ापे तक बना रहता है। एक बार बचपन में अपने घर में छठ पूजा (सूर्य पूजा) के बाद ठेकुआ (गेहूं के आटा से बनाया जाने वाला sweet) खाते समय रज़िया लेखक के सामने आ जाती है। बाल मन उसी समय से रज़िया को देखकर उसकी सुंदरता पर मोहित हो जाता है। लेकिन, कभी मजाक में भी इस बात की चर्चा न करता। समय के साथ-साथ दोनों के जीवन में कई बदलाव होते हैं। बचपन में रज़िया अपनी माँ के साथ चूड़ी बेचने आती थी। माँ के बाद वह भी चूड़ी बेचने का काम करने लगती है। शादी के बाद उसका पति उसके साथ चूड़ी बेचने आता है। गाँव में ही शादी होने से लेखक की मुलाकात रज़िया से हो जाती थी। इसी वजह से लेखक रज़िया के बचपन यौवनावस्था और बुढ़ापा का चित्रण कर सका। इस रेखाचित्र में रज़िया, उसका व्यवसाय, उसकी जाती, राजनीति, धर्म, सांप्रदायिकता, सौहार्द आदि सभी विषयों पर बहुत ही कम शब्दों में संकेत किया गया है। इसलिए यह रेखाचित्र कई दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है।

बेनीपुरी जी की 'रज़िया' शीर्षक रचना संस्मरणात्मक रेखाचित्रों में अपना अद्वितीय स्थान रखती है। इस रेखाचित्र में सब कुछ अचंभित करने वाला तथा स्मृति कणों के बेजोड संयोजन है। रेखाचित्र के लेखक, नायिका, वातावरण, घटनाएं एक दूसरे से इस प्रकार जुड़े हैं कि इनके परस्पर संबंध बने रहते हैं और साथ-साथ ही सबका मिश्रित रूप अपने घटनाक्रम से हमें बांध लेता है। रेखाचित्र के समाप्त हो जाने के बाद भी हम कुछ देर तक उसी रस में प्रवाहित होते रहते हैं। इस रेखाचित्र के व्यंजना की गहन तथा मार्मिक

अनुभूति का एक उदाहरण निम्नलिखित है।

रज़िया रेखाचित्र में वर्णित स्त्री जीवन:

रज़िया रेखाचित्र के माध्यम से लेखक एक चूड़िहारिन की बेटी जिसका नाम रज़िया था, उसके बारे में बताता है। बचपन में खेलते खाते समय उसकी भेंट अचानक रज़िया से होती है। जब यह खाने के समय लेखक के सामने आ जाती है। जिस पर लेखक की मौसी उसे डांटती हुई बोलती है कि दूर रहो, खाना छुआ जाएगा। अर्थात् खाना अशुद्ध हो जाएगा। इसके बाद लेखक उसे देखता है और उसकी सुंदरता पर मानों कहीं अटक जाता है। रज़िया के उम्र बढ़ने के बारे में बताते हुए लेखक लिखता है कि- रज़िया बढ़ती गई। जब-जब भेंट होती मैं पाता, उसके शरीर में नए-नए विकास हो रहे हैं। शरीर में और स्वभाव में भी। पहली भेंट के बाद पाया था, वह कुछ प्रगल्भ हो गई है। मुझे देखते ही दौड़कर निकट आ जाती, प्रश्न पूछती। अजीब अटपटे प्रश्न। देखिए तो, यह नई बालियाँ आपको पसंद है? रज़िया का यौवन अवस्था का चित्रण करते हुए लिखते हैं कि- फिर कुछ दिनों के बाद पाया वह अब संकुचा रही है। मेरे निकट आने से पहले वह इधर-उधर देखती और जब कुछ बातें करती तो ऐसी चौकन्नी सी कि कोई देखा न ले, सुन न ले।

रज़िया के बुढ़ापे का चित्रण करते हुए लेखक ने लिखा है कि- उसकी दोनों पतोहुँ उसे सहारा देकर आँगन में ले आई। रज़िया- हां मेरे सामने खड़ी थी दुबली-पतली, रूखी-सुखी। किन्तु जब नज़दीक आकार उसने "मालिक सलाम" कहा, उसके चेहरे से एक क्षण के लिए झुर्रियाँ कहाँ चली गई, जिन्होंने उसके चेहरे को मकड़जाला बना रखा था। मैंने देखा, उसका चेहरा अचानक बिजली के बल्ब की तरह चमक उठा और चमक उठी वे नीली आंखें, जो कटोरे में धंस गई थीं। और, अरे चमक उठी हैं आज फिर वे चाँदी की बालियाँ और देखों, अपने को पवित्र कर उसके चेहरे पर फिर अचानक लटककर, चमक रहीं हैं वे लटें, जिन्हें समय ने धो-पोछ कर शुभ्र-श्वेत बना दिया है। इस उदाहरण में मालिक, सलाम शब्द का प्रयोग, समस्त पुरानी स्मृतियों को एक जीवंत रूप दे देता है। इस रेखाचित्र में लेखक की अपनी तीव्र अनुभूति तो है ही साथ ही रज़िया की परिवर्तित स्थिति पाठक को एक ऐसे संभ्रम में डाल देती है जिससे उबरने की अपेक्षा वह अधिकाधिक धन और सत्ता चला जाता है और लेखक की अनुभूति के साथ तादात्म्य स्थापित कर लेता है। लेखक की भावना परम वैयक्तिक तथा निजी अनुभूतियों से ओत-प्रोत है, किन्तु, उसकी परिणति समाज सापेक्ष भाव में होती है। परिणामतः एक प्रकार की परिसीमा निश्चित हो जाती है। जिसका रज़िया, लेखक और पाठक पालन करते हैं। यह परिसीमा ही इस रचना को शक्तिशाली रेखाचित्र की विशेषताओं से समन्वित बनाती है।

रज़िया रेखाचित्र में चित्रित स्त्री समस्या:

इस रेखाचित्र में स्त्री की समस्या को दिखाया गया है। जहां पर लड़के-लड़की का आपसी सामान्य सा व्यवहार भी बहुत जटिल तरीके से व्याख्यायित किया जाता है। यह संकुचित मानसिकता आज भी बनी हुई है। गाँव में आज भी किसी लड़की के लिए किसी तरह के लड़के या पुरुषों से बात करना या मिलना-जुलना बहुत गलत काम माना जाता है। आज भी गांव में लड़के-लड़कियों के बीच सामान्य से दोस्ती या मित्रता का स्थान नहीं है। यही कारण है कि लेखक बिना किसी कारण के ही रज़िया से मिलने या बात करने में भी कई बार सोचता है। चुनाव के समय रज़िया के गांव में जाने के बाद स्वयं लेखक का मन उससे मिलने का होने के बाद भी उसमें हिम्मत न होती कि वह रज़िया का नाम लेकर

उसके घर का पता तक पूछ सके। इसी तरह शहर में जब रज़िया किसी बच्चे से लेखक को मिलने के लिए बुलाती है तो लेखक उसके पास जाने के बारे में भी सोचता है। गाँव में आज भी इसी तरह की स्थितियाँ हैं। आज भी लड़के-लड़कियाँ अपने साथी मित्रों से बातचीत या भेंट-मुलाकात नहीं कर पाते। ऐसा करना गलत माना जाता है।

'रज़िया' शीर्षक रेखाचित्र में गाँव की चूड़िहारिन रज़िया के ग्रामीण सौन्दर्य, भोलापन और अल्हड़पन से लेकर उसके जीवन संघर्ष तक का मार्मिक शब्द चित्रण प्रस्तुत किया गया है। बेनीपुरी जी के इन चरित्र कथाओं में ग्रामीण जीवन की सादगी, निश्छलता, आपसदारी और सांप्रदायिक एकता के चित्र भरे पड़े हैं। रज़िया रेखाचित्र भी इसका एक बेहतरीन उदाहरण है। रज़िया रेखाचित्र में रामवृक्ष बेनीपुरी ने रज़िया के पति से होने वाली पहली मुलाकात को कितने सुंदर ढंग से अभिव्यक्ति किया है- ज्यों-ज्यों शहर में रहना बढ़ता गया, रज़िया से भेंट भी दुर्लभ होती गई और एक दिन वह भी आया, जब बहुत दिनों पर उसे अपने गाँव में देखा। पाया उसके पीछे एक नौजवान चूड़ियों की खांची सिर पर लिए है। मुझे देखते ही वह सहमी, सिकुड़ी और मैं ने मान लिया, यह उसका पति है। किन्तु तो भी अनजान सा पूछ ही लिया, इस जमुरे को कहां से उठा लाई है रे? इसी से पूछिए, साथ लग गया तो क्या करूँ? नौजवान मुस्कुराया, रज़िया भी हंसी, बोली- यह मेरा खाविंद है, मालिक! रामवृक्ष बेनीपुरी के इस रेखाचित्र में जहां चरित्र चित्रण प्रमुख रूप से अभिव्यक्त होता है वहाँ सांकेतिकता ही जुड़ी नजर आती है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि व्यक्तित्व एवं चरित्र चित्रण को अभिव्यक्त करने के लिए संकेतों का प्रयोग विशेष रूप से किया जाता है।

रज़िया रेखाचित्र में वर्णित समाज एवं उसकी समस्याएं:

बेनीपुरी जी ने अपने रेखाचित्रों में सामाजिक समस्याओं को यथार्थ रूप में चित्रित किया है। इनमें समस्याएं अपने आप साकार हो जाती हैं। उदाहरण के लिए- कानों में चाँदी की बालियाँ, गले में चाँदी का हैकल, हाथों में चाँदी के कंगन और पैरों में चाँदी की गोड़ाई, भर बाह की बूटेदार कमीज़ पहने, काली साड़ी की छोर को गले में लपेटे, गोरे चेहरे पर लटकते हुए कुछ बालों को संभालने में परेशान वह छोटी सी लड़की जो उस दिन मेरे सामने आकर खड़ी हो गई थी। अपने बचपन के उस रज़िया की स्मृति ताजी हो उठी जब मैं अभी उस दिन अचानक उसके गाँव में जा पहुंचा। रज़िया के बाह्य व्यक्तित्व की वास्तविक स्थिति के निदर्शक गहने, कपड़े, भेषभूषा का सूक्ष्म वर्णन है जो रज़िया का वास्तविक रूप मूर्तिमान कर देता है। यह रज़िया की पोती थी जो लेखक को अपने घर बुलाने के लिए आ गई थी। रज़िया के गाँव में लेखक की जीप घुसने के बाद से ही लेखक के मन में केवल रज़िया की स्मृतियाँ उमड़ रही थी लेकिन वही झूठे समाज, पद, प्रतिष्ठा आदि के डर से लेखक में हिम्मत न होती कि वह उसका नाम ले सके। लेकिन, जब रज़िया की पोती उन्हें अपने घर ले जाने के लिए आती है तो लेखक उसके साथ चला जाता है।

इस समस्या के अतिरिक्त गाँव के समाज से जुड़ी कई अन्य समस्याओं का चित्रण भी लेखक ने किया है। जिनमें लिंग, धर्म, वर्ग, आधुनिकता आदि मुख्य हैं। जेंडर यानि लिंग का भेद आज भी गाँव में बहुत जटिल है। किसी भी जाति, धर्म के लड़के-लड़कों के बीच मैत्री का व्यवहार बहुत ही अपमानजनक माना जाता है। लड़के- लड़की के बीच के रिश्ते के लिए गाँव में एक ही नाम है जिसे 'शादी' का नाम दिया जाता। यदि किसी के बीच इस तरह का रिस्ता होता भी है तो उसे बहुत छुपाकर लोग चलते हैं। या फिर सार्वजनिक स्तर

पर उस रिश्ते को दिखाते ही नहीं। यही कारण है कि लेखक और रज़िया के बीच में कोई विशेष संबंध न होने के बावजूद भी वे सामान्य रूप से एक दूसरे से न तो मिल सकते थे और न ही बातचीत ही कर सकते थे।

इसके अतिरिक्त गाँव में सुंदर लड़कियों या स्त्रियों को किस नजरिए से देखा जाता इसका भी जिक्र लेखक ने प्रकारांतर से इस रेखाचित्र में किया है। अर्थात् हर व्यक्ति चाहता है कि वह सुंदर स्त्री को देखे, या उससे बातचीत, हंसी-मजाक करे लेकिन वही व्यक्ति बाद में उसी स्त्री का अन्य पुरुष से चरित्र हनन करते हुए भी मिलता है। जैसा कि इस रेखाचित्र की नायिका रज़िया बहुत सुंदर है। जब वह चूड़ी पहनाने के लिए अपनी खांची लेकर लोगों के गांव या घर में जाति है तो सभी विवाहित, अविवाहित उसे भर नजर देखने में ही लगे रहते हैं लेकिन कोई भी उससे दोस्ती या मैत्री का संबंध नहीं रख सकता था। क्योंकि गाँव में इस तरह के सम्बन्धों की कोई स्वीकृति नहीं है।

धर्म और शुद्धता-अशुद्धता का भी चित्रण इस रेखाचित्र में लेखक ने लिया है। बचपन में लेखक के खाते समय रज़िया को उनके पास जाने से जब उनकी मौसी रोकती है तो वहाँ पर उनके एक वाक्य से धर्म के प्रति लोगों के मन का हिन्दू-मुसलमान विभेद उजागर हो जाता है। वर्ग का भेद भी बड़ी कठोरता से गांव में पालित-पोषित होता है। जो लोग नौकरी, पद, प्रतिष्ठा एवं पैसों में बड़े हो जाते उनका अपने से छोटे लोगों के साथ बहुत सामान्य सा व्यवहार बहुत गलत माना जाता है। यही कारण है कि लेखक चाहकर भी रज़िया से सामान्य भेंट या बातचीत नहीं कर पाता। इसके अतिरिक्त शुद्धता और जाति की कठोरता को बताते हुए रज़िया लेखक से बोलती है कि लोगों का मन बहुत बदल गया है। अब कोई हिन्दू परिवार या दुल्हने मुसलमानों के हाथों से चूड़िया नहीं पहनतीं। आज के समय में हिन्दू चूड़िहारिन और दर्जी भी हो गए हैं। लेकिन लेखक की पत्नी रज़िया के हाथों से ही चूड़ियाँ पहनती है। इससे आपसी सौहार्द का भी पता चलता है। लेकिन, यह भी सत्य है कि नए जमाने में जाति या धर्म की दूरी कम होने के बजाए इसके बढ़ने के बारे में लेखक ने बताया है। आज के समय में भी जाति एवं धर्म की लड़ाई खतम होने के बजाए बढ़ती ही जा रही है।

आधुनिकता के बारे में बताते हुए रज़िया जब शहर में लेखक से मिलती है तो वह बताती है कि आज का समय बदल गया है। आज की दुल्हनों या लड़कियों को नए जमाने की चूड़ियाँ पसंद है। वे लाख की चूड़ियाँ नहीं पहनना चाहती। इसी प्रकार का वास्तविक व्यक्तित्व चित्रण रामवृक्ष बेनीपुरी जी के अन्य रेखाचित्रों में भी मिलता है। रज़िया रेखाचित्र में बेनीपुरी जी ने मनोवैज्ञानिक यथार्थ का सुंदर वर्णन किया है जिससे बढ़ती उम्र के साथ रज़िया में प्रस्फुटित होने वाले संकोच और प्रेम भाव का एक उदाहरण देखिए- रज़िया बढ़ती गई। जब-जब भेंट होती मैं पाता, उसके शरीर में नए-नए विकास हो रहे हैं। शरीर में और स्वभाव में भी। पहली भेंट के बाद पाया था, वह कुछ प्रगल्भ हो गई है। मुझे देखते ही दौडकर निकट आ जाती प्रश्न पूछती। अजीब अटपटे प्रश्न! देखिए तो यह नई बालियाँ, आपको पसंद है? क्या शहरों में ऐसी बालियाँ पाहनी जाती है? मेरी मां शहर में चूड़िया लाती है, मैंने कहा है इस बार मुझे भी ले चलो। आप किस तरफ रहते हैं वहाँ? क्या भेंट हो सकेगी? वह बके जाती, मैं सुनते जाता, शायद जवाब की जरूरत भी नहीं महसूस करती। रज़िया शीर्षक रेखाचित्र में रज़िया के साथ भावना के स्तर पर लेखक के जो संबंध पहले से ही चले आए थे। शब्द सह-स्मृति के माध्यम से वे अधिक उजागर किए गए हैं। लेखक के बचपन में रज़िया की मां ने हंसी-हंसी में जो शब्द उच्चरित किया था वही शब्द रज़िया

के मुख से सुनकर लेखक विचलित होता है, उसके भाव लोक में हलचल मच जाती है। इस स्थिति का संकेतात्मक वर्णन निम्न है खाविंद बचपन की उस पहली मुलाकात में उसकी मां ने दिल्लगी में जो कह दिया था. वह बात कहां सोई पड़ी थी? अचानक वह जगी और मेरी पेशानी पर उस दिन शिकन जरूर उथ आए होंगे, मेरा विश्वास है। अपने पति को लेखक का परिचय देते हुए रज़िया बताती है कि- यह मेरे खाविंद हैं मालिक! शब्दों में रज़िया ने लेखक को परिचय कराया था और खाविंद शब्द सुनकर लेखक की मनःस्थिति की हलचल कैसे हुई इसका सुंदर संकेत इस उदाहरण में मिलता है।

सारांश

'रज़िया' रेखाचित्र में लेखक ने रज़िया के माध्यम से अपने समाज को एवं गांव को उकेरा है। रज़िया उनके बचपन की परिचित होती है। जिसका व्यवसाय चूड़ी पहनाना होता है। लेखक ने रज़िया को बचपन से बुढ़ापे तक देखा था। इसी वजह से वह रज़िया के चरित्र को अपने रेखाचित्र में जगह दिया। रज़िया रेखाचित्र के माध्यम से लेखक ने न केवल रज़िया की स्मृतियों को ही नहीं उकेरा है अपितु अपने बालमन के पसंद को उसकी सुंदरता को, उसके बचपन को, यौवन को, उसके व्यवसाय को, उसके धर्म को, उसके जीवन की समस्याओं को आदि सभी बिन्दुओं को उकेरा है। रज़िया रेखाचित्र में लेखक ने मात्र एक पात्र के माध्यम से अपने गांव एवं आस-पास के पूरे समाज को उकेर कर रख दिया है। इस तरह के रेखाचित्र आज एक समय में मौजूद समान तरह की समस्याओं के उन्मूलन का आहवाहन है।

एक अंक

1. रज़िया क्या काम कर रही थी?
रज़िया चुड़िहारिन थी।
2. लेखक के गांव में किस का भेदभाव नहीं था?
हिंदू मुस्लिम का
3. रज़िया का विवाह किससे हो गया?
हसन
4. रज़िया की मां किस की खंचियां लेकर आती थी?
चूड़ियों की खंचियां
5. लेखक बड़े होने पर पढ़ने के लिए कहां गए?
शहर
6. रज़िया के कितने बेटे थे?
तीन बेटे
7. रज़िया का बड़ा बेटा कहां कमाता है
कोलकता में
8. मनचला बेटा कौन सी पेश में लगा है
पुश्तैनी पेश में
9. रज़िया का छोटा बेटा कहां पढ़ रहा था
शहर में
10. लेखक बचपन में कहां खो गए थे
एक मेले में
11. बहुत दिन के बाद लेखक और रज़िया का बेल्ट किस सिटी में हुई

पटना

12. "रजिया" रेखाचित्र के लेखक कौन है?

रामवृक्ष बेनीपुरी

13. रजिया की मां क्या काम करती थी?

घर-घर जाकर चूड़ियां बेचती थी

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी

- गजानन माधव मुक्तिबोध

महात्मा गाँधी एक ऐसे व्यक्ति हैं जिसने जनता के साथ स्वयं को एकीकार कर लिया। जनता का उत्थान उनका प्रथम लक्ष्य था धर्म सदैव गौण। महात्मा गाँधी ने देश की स्वाधीनता, विश्व की शांति और मैत्री तथा अन्याय के विरुद्ध अहिंसात्मक प्रतिरोध और मानव हृदय को नैतिक बल प्रदान किया। देश और विश्व के बड़े बड़े मनीषियों के विचारों को अपने में रंग दिया। भारतीय जनता को नये अध्यात्मिक संस्कार प्रदान किए।

हजारों वर्षों में एकाध बार जो आदमी नजर आते हैं उनमें महात्मा गाँधी का नाम आता है। अहिंसा तथा सत्याग्रह उनके दो प्रधान सिद्धान्त हैं जिनके प्रयोग द्वारा उन्होंने भारतीय स्वाधीनता स्थापित की। महात्मा गाँधी ने ब्रिटिश साम्राज्य को ऐसी करारी चोट दी कि वह हिल गया।

महात्मा गाँधी ने अपने कार्य द्वारा विश्व इतिहास में एक महान घटना उपस्थित कर दी। अमरीका और अफ्रीका की नीग्रो तथा अन्य पराधीन जातियाँ गाँधीजी के नैतिक अस्त्रों का प्रयोग करती हैं।

महात्मा गाँधी जी न केवल अपने नैतिक सिद्धान्तों में विश्वास करते थे। जनता की आध्यात्मिक और नैतिक शक्ति में गाँधी जी की निष्ठा थी। उन्हें मालूम था कि जनता त्याग और बलिदान से भारत को स्वाधीन करायेगी। इसलिए उन्होंने निष्ठापूर्वक अपने को जनता का बना लिया। वे झोपड़ियों में रहे, नंगे पैर चले, एक धोती भर पहने।

मोहनदास करमचन्द गाँधी के पिता राजकोट रियासत के दीवान थे। उनके यहाँ सब कुछ था धन, दौलत, पैसा, इज्जत और ताकत। गाँधी जी ने सब कुछ ठुकरा दिया। अपनी आदतों को सुधारा, स्वयं को वशीभूत कर लिया। वे हृदय की शुद्धि के लिए उपवास करते। मन को मजबूत बनाने के लिए यह जरूरी है कि वह अपने सुख या दुःख को न देखकर दूसरों के दुःख को देखे।

वैष्णव जन तो तेणे कहिए जे पीर पराई जाणे रे।

इस पराई पीर के पीछे उन्होंने अपना सब कुछ त्याग दिया। इनकी झोपड़ी में हिन्दू, मुस्लिम, सिख, इसाई सभी धर्मों के भजन, गीत, स्तोत्र गूँजती रहती थी। सन 1928 में गाँधी जी ने कहा:-

1) सब धर्म सत्य हैं।

2) सब धर्मों में कोई न कोई गलती है।

3) जैसे मुझे मेरा हिन्दू धर्म प्यारा है, वैसे ही मुझे सब धर्म प्यारे हैं।

जब महात्मा गाँधी राजनीति में अवतीर्ण हुए तब जनता कष्ट में डूबी हुई थी। शिक्षित मध्य वर्ग को मालूम नहीं था कि उन्हें प्राचीन की ओर जाना है या नवीन की ओर। रईस जमींदार अंग्रेजों के आँचल में दुबक गया था। उद्योगपति वर्ग अंग्रेजों से नाराज था। देश में विफलता और उदासीनता का साम्राज्य था। उस समय राजनीति दो ढंग की थी। कांग्रेस देश में भाषण देते थे या आतंकवादी विस्फोट करते थे। कांग्रेस जनतंत्रात्मक संस्था थी पर वोट देने का अधिकार सिमित था। वह उच्च वर्गों के हाथ में था।

महात्मा गांधी ने कांग्रेस के विधान में संशोधन किया। उसे जनता, किसान, मजदूरों के लिए खुला कर दिया। आतंकवादी रास्तों के विरोध किया, शिकायती तरीके और भाषण छोड़कर काम की नयी पद्धति हुई। अंग्रेजों के प्रतिरोध के लिए निर्भयता और सत्यनिष्ठ की बुनियाद पर, असहकार और सत्याग्रह का सिद्धांत रखा गया। कार्यक्रम दो प्रकार के थे।

- 1) शांतिपूर्ण ढंग से अहिंसात्मक पद्धति
- 2) समाज सुधार तथा रचनात्मक कार्य जैसे अस्पृश्यता, अल्पसंख्यक की समस्याओं, चर्खा

चलाना तथा ग्रामीण उद्योगों को प्रोत्साहन।

यह आवश्यक था की जनता पर छापी विदेशी धाक, दबदबे, प्रतिष्ठा और साख का लोप हो। जनता के दिल खुले, साहस उत्पन्न हो, वह निर्भय हो और सत्यपरायण बने। अंग्रेजी सरकार के बुनियाद को खिसका देने के लिए गाँधी जी ने सबसे विदेशी शासकों द्वारा दी गयी उपाधियों के त्याग का अनुरोध किया। लोग उपाधियों को त्यागा। जनता से अंग्रेजों की धाक उड़ गयी, लोग निर्भय होने लगे।

महात्मा गाँधी के जीवन का अनुकरण करते लोग सादगी से रहने लगे। बड़े-बड़े राजनीतिज्ञ

जो शहरों में लम्बे भाषण देते थे उन्हें गाँधी जी सादगी सिखाकर गाँवों में भेजा जिससे राष्ट्रीय मुक्ति का संदेश गाँव वालों को दे सके। इस प्रकार गरीब जनता का प्रभाव कांग्रेस पर बढ़ गया।

गाँधी जी का स्वप्नों का भारत "गरीब से गरीब यह महसूस करेगा कि यह उसका देश है। जिसके निर्माण में उसका भी प्रभावशाली हाथ है। ऐसा भारत जिसमें न उच्च वर्ग, न निम्न वर्ग, जिसमें अस्पृश्यता का अभिशाप या उत्तेजक बूटियों को कोई स्थान नहीं। जहाँ स्त्रियों को वही अधिकार है जो पुरुषों को।

गाँधी जी भारतीय जनता को एक चुम्बक की भांति अपने पास खींच लेते। जनता को स्वावलंबन, आत्मानिर्भरता, प्रेम, सद्भावना, मानव एकता तथा सादगी सिखाया। जनता का उत्थान गाँधी जी का प्रथम लक्ष्य, धर्म उससे गौण रहा।

गाँधी जी ने कहा "आधी भूखी जनता कोई धर्म नहीं रख सकी न कोई कला, न कोई संगठन। मेरे लाखों करोड़ों भूखे लोगों को जो भी उपयोगी दिखाई दे वह सुन्दर है और तब जीवन का सारा सौन्दर्य और अलंकरण आप ही आप अनुगलत होगा। मैं ऐसी कला और साहित्य चाहता हूँ जो करोड़ों जनता से बोल सके।

भारत के इतिहास में करोड़ों भूखे जनों को महत्त्व देनेवाला, सगा बनाने वाला एक व्यक्ति सम्मुख आया। जनता को नैतिक साहस प्रदान किया। उस नैतिकतापूर्ण जन शक्ति के अघात से ब्रिटिश साम्राज्य चूर-चूर हो गया। गाँधी जी की मृत्यु भी उसी शहीदाना तरीके से हुई। एक तुच्छ हिंदू सम्प्रदायवादी की गोली का शिकार हुआ। भारत ही नहीं विश्वभर ने उसकी मृत्यु का शोक मनाया। तीस जनवरी उन्नीस सौ अड़तालीस का दिन काली छायाओं में डूब गया था।

लिंग (Gender)

वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़िए
 प्रणव स्कूल जा रहा है।
 गाय दूध देती है।
 घोड़ा दौड़ रहा है।
 माता जी खाना बना रही हैं।
 कुत्ता खड़ा है।
 दादा जी अखबार पढ़ रहे हैं।

उपर्युक्त वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़ने से पता चलता है कि 'प्रणव', 'घोड़ा', 'कुत्ता' तथा 'दादा जी' शब्द पुरुष जाति के हैं तथा 'गाय' तथा 'माता जी' शब्द स्त्री जाति के हैं।

लिंग का अर्थ है-'चिह्न' अथवा 'लक्षण'।

"शब्द के जिस रूप से यह पता चले कि वह पुरुष जाति का है अथवा स्त्री जाति का, उसे लिंग कहते हैं।

लिंग के भेद

हिंदी में लिंग के दो भेद हैं

1. पुल्लिंग
2. स्त्रीलिंग

1. पुल्लिंग-

जिस शब्द से पुरुष जाति के होने का बोध होता है, उसे पुल्लिंग कहते हैं; जैसे- लड़का, पिता, भाई, कुत्ता, शेर, घोड़ा, हाथी, नाना, कवि, लेखक आदि।

2. स्त्रीलिंग

जिस शब्द से स्त्री जाति के होने का बोध होता है उसे स्त्रीलिंग कहते हैं। जैसे- गाय, लड़की, लता, शेरनी, मोरनी कोठरी, तसवीर, चिट्ठी, गंगा, अलमारी, कॉपी आदि।

लिंग की पहचान

जो प्राणीवाचक शब्द पुरुष जाति के होते हैं, उन्हें पुल्लिंग तथा जो स्त्री जाति के होते हैं, उन्हें स्त्रीलिंग कहते हैं, परंतु जो शब्द अप्राणीवाचक होते हैं, उनके लिंग जानने में कठिनाई होती है क्योंकि इसके लिए कोई निश्चित नियम नहीं है; जैसे-पत्र, मेज, तसवीर, कमरा, हरियाली दूध, चाय, पानी, विद्यालय आदि का लिंग निर्धारित करने में कठिनाई आती है क्योंकि ये सभी अप्राणीवाचक हैं। इनके लिंग-निर्धारण के लिए शब्दकोश, व्याकरण तथा विद्वानों के मत ही मानक माने जाते हैं। प्रयोग के आधार पर लिंग-निर्णय संबंधी कुछ नियम निम्नलिखित हैं-

पुल्लिंग की पहचान

प्राणीवाचक पुल्लिंग संज्ञाएँ-पुरुष, आदमी, मनुष्य, शेर, चीता, हाथी, कुत्ता, घोड़ा, तोता, मेंढक, साँप, कबूतर आदि शब्द पुल्लिंग होते हैं।

निम्नलिखित प्रत्यय युक्त संज्ञा शब्द प्रायः पुल्लिंग होते हैं, जैसे-

आ- लोटा, मोटा, छाता, सोना, लोहा आदि।
 आव- चढ़ाव, बहाव, प्रभाव, चुनाव आदि।
 पा- बुढ़ापा, मोटापा आदि।
 खाना- डाकखाना, पागलखाना, दवाखाना, तोपखाना आदि।
 त्व- देवत्व, स्त्रीत्व, ममत्व, ब्रह्मत्व, प्रभुत्व आदि।
 वाला- फलवाला, चायवाला, अंडेवाला, दूधवाला आदि।
 पन- बचपन, लड़कपन, पागलपन आदि।
 एरा- ममेरा, मौसेरा, ठठेरा, सपेरा, लुटेरा, घनेरा आदि।
 आर- सवार, सुनार, व्यापार, लुहार, विचार आदि।
 दान- कलमदान, फूलदान, इत्रदान, कूड़ादान आदि।
 आवा- पहनावा चढ़ावा, दिखावा, बुलावा आदि।

नीचे लिखी संज्ञाएँ सदा पुल्लिंग होती हैं

1. पर्वतों के नाम- हिमालय, कैलाश, विंध्याचल, आल्पस, अरावली आदि।
2. फलों के नाम- आम, सेब, केला, संतरा, अमरूद, अनन्नास, चीकू आदि।
3. महीनों के नाम- सभी भारतीय हिंदी महीनों के नाम, जैसे- चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, अगहन, पौष, माघ, फाल्गुन। अंग्रेजी महीनों के नाम; जैसे- मार्च, अप्रैल, जून, अगस्त, सितंबर, अक्तूबर, नवंबर और दिसंबर आदि। (अपवाद- जनवरी, फरवरी, मई, जुलाई)
4. दिनों के नाम- सोमवार, मंगलवार, बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार, शनिवार, रविवार आदि।
5. समय-सूचक नाम- क्षण, सेकंड, मिनट, घंटा, दिन, सप्ताह, पक्ष, माह, वर्ष, युग आदि।
6. देशों के नाम- भारत, नेपाल, भूटान, थाइलैंड, पाकिस्तान, चीन, जापान, रूस, इंडोनेशिया, मालदीव, अमेरिका, फ्रांस आदि।
7. ग्रहों के नाम- सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु, नेपच्यून आदि (अपवाद - पृथ्वी)
8. धातुओं के नाम- सोना, पीतल, ताँबा, लोहा आदि। (अपवाद-चाँदी)
9. वृक्षों के नाम- नीम, बरगद, बबूल, आम, अमरूद, अशोक, ताड़ आदि।
10. अनाजों के नाम- चावल, गेहूँ, मक्का, बाजरा, चना आदि। (अपवाद अरहर, ज्वार)
11. द्रव्य/पदार्थों के नाम: तेल, घी, दूध, शरबत, मक्खन आदि। (अपवाद-कॉफी, चाय आदि)
12. वर्णमाला के अक्षर- सभी वर्ण पुल्लिंग है। (अपवाद - इ, ई, ऋ)
13. महासागरों के नाम- हिंद महासागर, प्रशांत महासागर, अंधमहासागर आदि।
14. मूल्यवान पत्थर या रत्न- हीरा, पुखराज, नीलम, गोमेद, पन्ना, मोती, माणिक्य आदि। (अपवाद- मणि)
15. जिन शब्दों के अंत में 'ख' 'ज' और 'त्र' आता है, वे पुल्लिंग होते हैं -
 ख- सुलेख, सुख, दुख, लख, नख, शिख आदि।
 ज- पंकज, धीरज, नीरज, जलज, सरोज आदि।
 त्र- चित्र, पत्र, मित्र, नेत्र, पात्र, चरित्र आदि।
16. शरीर के कुछ अंग- सिर, बाल, माथा, नाक, गाल, कान, ओंठ, मुँह, दांत आदि।

स्त्रीलिंग की पहचान:-

निम्नलिखित प्रत्यययुक्त शब्द सदा स्त्रीलिंग होते हैं-

ई- चाँदी, नदी, हँसी, बोली, गाड़ी, साड़ी, कॉपी, चिट्ठी आदि।

आवट- सजावट, मिलावट, घबराहट, थकावट, बनावट आदि।

आहट- मुस्कराहट, घबराहट, चिकनाहट, कड़वाहट आदि।

आई- पढाई, लिखाई, लडाई, जुलाई, बुलाई, भलाई, बुनाई आदि।

आरी- पिचकारी, चिंगारी, नारी, दुधारी, सुपारी आदि।

इका- नायिका, सेविका, गायिका, लेखिका, पाठिका आदि।

इया- गुड़िया, पुड़िया, चिड़िया, बुढ़िया, बिटिया आदि।

वती- बलवती, धनवती, पुत्रवती, सौभाग्यवती आदि।

नीचे लिखी संज्ञाएँ सदा स्त्रीलिंग होती हैं-

1. नदियों के नाम- रावी, ब्यास, सतलुज, झेलम, कृष्णा, गोदावरी, नर्मद, गंगा आदि।

2. लिपियों के नाम- देवनागरी, रोमन, गुरुमुखी आदि।

3. बोलियाँ- राजस्थानी, हरियाणवी, गढ़वाली आदि।

4. भाषाओं के नाम- हिंदी, बंगला, मलयालम, मणिपुरी, असमिया, रूसी, जापानी आदि।

5. तिथियों के नाम - प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी आदि।

6. शरीर के कुछ अंगों के नाम - आँखें, भौंहें, मूँछ, जीभ, गर्दन, उँगलियाँ आदि।

विशेष- नित्य (सदा) पुल्लिंग शब्द - कुछ ऐसे शब्द हैं जिनका प्रयोग सदा पुल्लिंग में ही किया जाता है; जैसे- कौआ, उल्लू, खटमल, तोता, मच्छर आदि।

इन्हें स्त्रीलिंग बनाने के लिए इनके पहले 'मादा' शब्द जोड़ा जाता है;

जैसे- मादा कौआ, मादा उल्लू आदि।

नित्य (सदा) स्त्रीलिंग शब्द- कुछ शब्दों का प्रयोग सदा स्त्रीलिंग में ही किया जाता है; जैसे - मैना, मछली, कोयल, मक्खी, चील आदि।

इन्हें पुल्लिंग बनाने के लिए इनके पहले 'नर' शब्द जोड़ा जाता है; जैसे- नर मैना, नर मछली आदि।

लिंग-परिवर्तन

पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने के नियम-

1. 'अ' को 'आ' में बदलकर

<u>पुल्लिंग</u>	<u>स्त्रीलिंग</u>	<u>पुल्लिंग</u>	<u>स्त्रीलिंग</u>
छात्र	छात्रा	भवदीय	भवदीया
शिष्य	शिष्या	चंचल	चंचला
वृद्ध	वृद्धा	कृष्ण	कृष्णा
प्रिय	प्रिया	सुत	सुता
पूज्य	पूज्या	श्याम	श्यामा

2. 'आ' को 'ई' में बदलकर

<u>पुल्लिंग</u>	<u>स्त्रीलिंग</u>	<u>पुल्लिंग</u>	<u>स्त्रीलिंग</u>
नाना	नानी	पुत्र	पुत्री
बेटा	बेटी	चाचा	चाची

बकरा	बकरी	मौसा	मौसी
घोड़ा	घोड़ी	मुर्गा	मुर्गी
मामा	मामी	बहरा	बहरी
भतीजा	भतीजी	लड़का	लड़की

3. 'आ' को 'इया' में बदलकर-

<u>पुल्लिंग</u>	<u>स्त्रीलिंग</u>	<u>पुल्लिंग</u>	<u>स्त्रीलिंग</u>
चूहा	चुहिया	बूढ़ा	बुढ़िया
चिड़ा	चिड़िया	लौटा	लुटिया
बेटा	बिटिया		

4. अंत में 'इन' जोड़कर

<u>पुल्लिंग</u>	<u>स्त्रीलिंग</u>	<u>पुल्लिंग</u>	<u>स्त्रीलिंग</u>
लुहार	लुहारिन	कुम्हार	कुम्हारिन
नाई	नाइन	धोबी	धोबन
माली	मालिन		

5. 'अक' को 'इक' में बदलकर-

<u>पुल्लिंग</u>	<u>स्त्रीलिंग</u>	<u>पुल्लिंग</u>	<u>स्त्रीलिंग</u>
भक्षक	भक्षिका	पाठक	पाठिका
बालक	बालिका	संरक्षक	संरक्षिका
अध्यापक	अध्यापिका	पालक	पालिका
लेखक	लेखिका	गायक	गायिका

6. अंत में 'आइन' लगाकर-

<u>पुल्लिंग</u>	<u>स्त्रीलिंग</u>	<u>पुल्लिंग</u>	<u>स्त्रीलिंग</u>
ठाकुर	ठकुराइन	बाबू	बबुआइन
लाला	लावारिश	पंडित	पंडिताइन

7. अंत में 'आनी' लगाकर-

<u>पुल्लिंग</u>	<u>स्त्रीलिंग</u>	<u>पुल्लिंग</u>	<u>स्त्रीलिंग</u>
जेठ	जेठानी	नौकर	नौकरानी
सेठ	सेठानी	चौधरी	चौधरानी
देवर	देवरानी	क्षत्रिय	क्षत्राणी
भव	भवानी	मेहतर	मेहतानी

8. 'मान' को 'मती' में बदलकर-

<u>पुल्लिंग</u>	<u>स्त्रीलिंग</u>	<u>पुल्लिंग</u>	<u>स्त्रीलिंग</u>
श्रीमान	श्रीमती	आयुष्मान	आयुष्मती
बुद्धिमान	बुद्धिमती		

9. 'वान' को 'वती' में बदलकर-

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
भाग्यवान	भाग्यवती	सत्यवान	सत्यवती
गुणवान	गुणवती	पुत्रवान	पुत्रवती
बलवान	बलवती	रूपवान	रूपावती

10. मादा लगा कर-

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
खरगोश	मादा खरगोश	भालू	मादा भालू
भेड़िया	मादा भेड़िया	गीदड़	मादा गीदड़

10. भिन्न रूप वाले पुल्लिंग-स्त्रीलिंग शब्द-

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
पिता	माता	बैल	गाय
ससुर	सास	राजा	रानी
बहनोई	बहन	कवि	कवयित्री
भाई	भाभी	विधुर	विधवा
पुरुष	स्त्री	ताऊ	ताई
बछड़ा	बछिया	नर	नारी
युवक	युवती	सधु	साध्वी
विद्वान	विदुषी		

वचन (Number)

दिए गए वाक्यों को पढ़िए।

'क' वर्ग

1. लड़की खेलती है।
2. मैंने एक पुस्तक खरीदी।
3. लड़का आया। 4. उसने एक कविता लिखी।

'ख' वर्ग

1. लड़कियाँ खेलती हैं।
2. मैंने पुस्तकें खरीदीं।
3. लड़के आए।
4. उसने पाँच कविताएँ लिखीं।

'क' वर्ग में दिए गए वाक्यों में रंगीन छपे शब्द किसी वस्तु या प्राणी के एक होने का बोध करा रहे हैं जबकि 'ख' वर्ग में इन्हीं शब्दों के कुछ बदले हुए रूप उनके एक से अधिक होने का बोध कराते हैं।

इन शब्दों से यह स्पष्ट है कि शब्दों के कुछ रूप उनके एक होने तथा कुछ रूप उनके एक से अधिक होने का बोध कराते हैं। शब्दों के ये रूप ही वचन कहलाते हैं।

"किसी शब्द के जिस रूप से उसकी संख्या (एक या अनेक) का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं। "

वचन के भेद:-

हिंदी में वचन दो प्रकार के होते हैं-

1. एकवचन
2. बहुवचन

1. एकवचन- शब्द के जिस रूप से एक वस्तु, पदार्थ या व्यक्ति का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं; जैसे- लड़का, नदी, पुस्तक, कुरसी, आँख आदि।

2. बहुवचन-

शब्द के जिस रूप से एक से अधिक वस्तु, पदार्थ या व्यक्तियों का बोध हो, उसे बहुवचन कहा जाता है।

जैसे- लड़के, नदियाँ, पुस्तकें, कुरसियाँ, आँखें आदि।

वचन की पहचान- वचन की पहचान मुख्य रूप से दो प्रकार से हो सकती है-

संज्ञा या सर्वनाम के रूप से-

- | | |
|-------------------------------|-----------------------------|
| (क) बच्चा खेल रहा है। (एकवचन) | बच्चे खेल रहे हैं। (बहुवचन) |
| (ख) वह जा रहा है। (एकवचन) | वह जा रहे हैं। (बहुवचन) |

क्रिया पदों के रूप से-

- | | |
|------------------------------|--------------------------------|
| पक्षी उड़ रहा है। (एकवचन) | पक्षी उड़ रहे हैं। (बहुवचन) |
| मजदूर काम कर रहा है। (एकवचन) | मजदूर काम कर रहे हैं। (बहुवचन) |

वचन संबंधी कुछ नियम

1. किसी व्यक्ति को आदर देने के लिए यह एकवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग किया जाता है-

जैसे-

मेरे पिताजी दफ्तर जा रहे हैं।

श्री राम सबके प्यारे थे।

महात्मा गांधी महान देशभक्त थे।

वे देश के लिए कई बार जेल गए।

2. दर्शन, आँसू, हस्ताक्षर, होश, प्राण, बाल, लोग आदि शब्द सदा बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं।

उदाहरण के लिए निम्नलिखित वाक्यों को देखें-

दर्शन- आपके दर्शन हेतु मैं यहाँ उपस्थित हुआ हूँ।

आँसू- उसके आँसू रोके नहीं रुक रहे थे।

हस्ताक्षर- उसके हस्ताक्षर देखकर ही मैंने रुपये दिए।

बाल- मेरे बाल सफ़ेद होते जा रहे हैं।

लोग- लोग कहते हैं कि वह धोखेबाज है।

3. स्वाभिमान अथवा अधिकार को प्रकट करने के लिए संज्ञा, सर्वनाम आदि का बहुवचन में प्रयोग किया जाता है, जैसे-

(क) हम (मैं) कहते हैं कि यह बात सत्य है।

(ख) हम (मैं) तुम्हारे पिता होने के नाते, तुम्हें सीख दे रहे हैं।

4. धातुओं का बोध कराने वाली जातिवाचक संज्ञाएँ एकवचन में ही प्रयुक्त होती हैं; जैसे-
 (क) लोहा मजबूत होता है।
 (ख) सोना बहुमूल्य होता है।

वचन परिवर्तन

एकवचन से बहुवचन बनाने की कुछ नियम निम्नलिखित हैं:-

1. अकारांत स्त्रीलिंग शब्दों के अंतिम 'अ' को 'ए' कर दिया जाता है: जैसे-

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
बात	बातें	पुस्तक	पुस्तकें
रात	रातें	आंख	आंखें
दवा	दवातें	गाय	गाएं

2. आकारांत पुल्लिंग शब्द के अंत में आए 'आ' को 'ए' कर दिया जाता है: जैसे-

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
कमरा	कमरे	दरवाजा	दरवाजे
चूहा	चूहे	बेटा	बेटे
कपड़ा	कपड़े	गधा	गधे
मुर्गा	मुर्गे	कुत्ता	कुत्ते

3. आकारांत स्त्रीलिंग शब्दों के अंतिम 'आ' के साथ 'ए' लगा देते हैं; जैसे-

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
माता	माताएं	कथा	कथाएं
माला	मालाएं	गाथा	गाथाएं
कन्या	कन्याएं	सभा	सभाएं
शिला	शिलाएं	महिला	महिलाएं

4. स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'या' आने पर अनुनासिक (ं) लगते हैं, जैसे;

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
बिटिया	बिटियां	गुड़िया	गुड़ियां
डिबिया	डिबियां	चिड़िया	चिड़ियां

5. इकारांत और ईकारांत स्त्रीलिंग शब्दों में 'या' लगाकर ईकारांत की 'ई' को 'इ' में बदल देते हैं; जैसे-

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
सखी	सखियां	कटोरी	कटोरियां
तिथि	तिथियां	स्त्री	स्त्रीयां
रानी	रानियां	कहानी	कहानियां

6. कुछ शब्दों में वृंद, दल, गण, जन, लोग आदि शब्द जोड़कर बहुवचन बनाए जाते हैं; जैसे-

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
-------	--------	-------	--------

विद्यार्थी	विद्यार्थिगण	अध्यापक	अध्यापकवृंद
गुरु	गुरुजन	आप	आपलोग
मित्र	मित्रवर्ग	हम	हम लोग
अमीर	अमीर लोग	सेना	सेनादल
गरीब	गरीब लोग	शिक्षक	शिक्षक वर्ग
दुश्मन	दुश्मन लोग		

कारक संबंधी नियम

'ने', 'को', 'से', 'में', 'का', 'के', 'की', आदि कारक-चिन्हों से पूर्व प्रायः सभी शब्दों के बहुवचनों में 'ओं' का प्रयोग किया जाता है। आकारांत पुल्लिङ्ग हो तो 'आ' प्रायः हट जाता है। यदि दीर्घ स्वर हो तो उसके स्थान पर ह्रस्व स्वर का प्रयोग किया जाता है।

1. शब्दों की आंत में 'ओं' लगा देते हैं; जैसे-

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
बंदर	बंदरों	पशु	पशुओं
चोर	चोरों	माता	माताओं
छात्रा	छात्राओं	कलम	कलमों
लड़का	लड़कों	योद्धा	योद्धाओं

2. ईकारांत शब्दों में 'ई' को 'इ' करके 'यों' लगा दिया जाता है; जैसे-

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
साड़ी	साड़ियों	गाड़ी	गाड़ियों
नदी	नदियों	लड़की	लड़कियों
गली	गलियों	सिपाही	सिपाहियों

3. ऊकारांत शब्दों में 'ऊ' को 'उ' करके 'ओं' लगा देते हैं; जैसे-

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
बहु	बहुओं	वधू	वधुओं
चाकू	चाकुओं	भालू	भालुओं

याद रखें-

1. शब्द के जिस रूप से उसके एक या अनेक होने का बोध हो, उसे वचन कहते हैं।
2. वचन के दो भेद हैं- एकवचन तथा बहुवचन।
3. आदर प्रकट करने के लिए एकवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग किया जाता है।
4. वर्षा, प्रजा, भीड़, जनता, धातु, दूध, घी, आदि शब्दों का प्रयोग सदैव बहुवचन में होता है।
5. आंसू, हस्ताक्षर, प्राण, दर्शन, होश, बाल आदि शब्द सदैव बहुवचन के रूप में प्रयोग होते हैं।

लिंग निर्णय के लिए महत्वपूर्ण नियम:-

जिस शब्द का लिंग निर्णय करना है उसे बहुवचन में बदल कर देखें कि उसके अंत में 'आं' या 'एं' आ रहा है या नहीं। यदि 'आ' या 'एं' रहा है तो शब्द स्त्रीलिंग होगा, यदि

नहीं आ रहा है तो पुल्लिंग होगा।

उदाहरण:- दरवाजा- दरवाजे -अंत में 'आं' या 'एं' नहीं है, - इसलिए पुल्लिंग।

खिड़की	खिड़कियां	(आं) स्त्रीलिंग
कुर्सी	कुर्सियां	स्त्रीलिंग
पंखा	पंखे	पुल्लिंग (एं) नहीं है।
मेज	मेजें	(एं) है स्त्रीलिंग
पुस्तक	पुस्तकें	एं है स्त्रीलिंग
रोटी	रोटियां	स्त्रीलिंग
सब्जी	सब्जियां	स्त्रीलिंग
पेंसिल	पेंसिलें	एं स्त्रीलिंग
दीवार	दीवारें	स्त्रीलिंग
दूध	दूध	पुल्लिंग
हवा	हवाएं	स्त्रीलिंग
चादर	चादरें	स्त्रीलिंग
कुत्ता	कुत्ते	पुल्लिंग
कार	कारें	स्त्रीलिंग
मोटर	मोट्रें	स्त्रीलिंग
रेल	रेलें	स्त्रीलिंग
लोटा	लोटे	पुल्लिंग
चूहा	चूहे	पुल्लिंग
कमरा	कमरे	पुल्लिंग
कपड़ा	कपड़े	पुल्लिंग
मुर्गा	मुर्गे	पुल्लिंग
दरवाजा	दरवाजे	पुल्लिंग
गधा	गधे	पुल्लिंग

कारक (Case)

निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए:-

श्रीराम महाराज दशरथ के बड़े पुत्र थे।

श्रीराम ने लंका के राजा रावण को मारा।

श्रीराम ने रावण को बाण से मारा।

राम का बाण रावण की नाभि में जा लगा और रावण का अंत हो गया।

भगवान श्रीराम ने धर्म की रक्षा के लिए रावण को मारा।

श्रीराम का बाण अग्निबाण था।

श्रीराम ने रावण के भाई विभीषण को लंका का राजा बनाया।

उपर्युक्त वाक्यों में 'के', 'को', 'ने', 'में', 'से', 'के लिए', 'का', 'की', 'का' जैसे विशेष चिह्नों का प्रयोग हुआ है। यदि इन्हें हटा दिया जाए तो वाक्यों में प्रेषित भावों को समझना असंभव होगा। अतः वाक्यों का ठीक से अर्थ समझने के लिए इनका प्रयोग करना आवश्यक है। ये सभी शब्द कारकों के चिह्न हैं, जिन्हें कारकों की विभक्तियाँ या परसर्ग भी कहा जाता है। इन्हीं के कारण वाक्य में आए संज्ञा या सर्वनामों का संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों से स्पष्ट

हो रहा है।

कारक- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध क्रिया तथा दूसरे शब्द के साथ सूचित किया जाता है, उसे कारक कहते हैं।

विभक्ति -कारकों का रूप प्रकट करने के लिए उनके साथ जो शब्द/चिह्न लगते हैं. उनको विभक्ति कहते हैं।

परसर्ग -इन विभक्तियों को परसर्ग भी कहते हैं, क्योंकि ये संज्ञा, सर्वनाम आदि शब्द के बाद जुड़ते हैं।

कारक के भेद

कारक के आठ भेद होते हैं

1.	कर्ताकारक	ने
2.	कर्म	को
3.	करण	से, के द्वारा
4.	संप्रदान	के लिए, को (देना अर्थ में)
5.	अपादान	से, की अपेक्षा (अलग होना)
6.	संबंध	का, के, की,
7.	अधिकरण	में, पर
8.	संबोधन	हे, रे, अरे

विशेष -कर्ता से अधिकरण तक सभी कारकों के विभक्ति-चिह्न शब्दों के अंत में लगाए जाते हैं, जबकि संबोधन कारक के चिह्न (हे!, अरे! आदि) शब्दों से पूर्व लगते हैं।

1.कर्ताकारक- (परसर्ग-'ने')

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से काम को करने वाले का बोध हो, उसे कर्ता कारक कहते हैं, जैसे

वरुण पुस्तक पढ़ेगा।

अनिल ने रामायण पढ़ी।

अंशु ने खाना बनाया।

नेहा स्कूल जाती है।

प्रणव ने खाना खाया।

पिता जी ने रुपये दिए।

गौतम ने छक्का लगाया।

अंकित ने फूल तोड़ा।

इन वाक्यों में वरुण, अंशु, अनिल, पिता जी, नेहा, गौतम, प्रणव, अंकित कर्ता हैं। अंशु अनिल, पिता जी, गौतम और अंकित के साथ 'ने' विभक्ति लगी है। अन्य वाक्यों को देखने से पता लगता है कि कई बार कर्ता कारक के साथ 'ने' विभक्ति नहीं लगती। ध्यान देने पर सिद्ध होता कि वर्तमान काल और भविष्यत् काल में कर्ता कारक के साथ 'ने' विभक्ति नहीं लगती; जैसे-

शीला गा रही है।

दीपा खेलने जाएगी।

लड़का आता है। (वर्तमान काल)

लड़का चित्र बनाएगा। (भविष्यत् काल)
अकर्मक क्रिया के साथ भी 'ने' विभक्ति नहीं लगती; जैसे

लड़के ने चित्र बनाया। (भूत काल- 'बनाया' क्रिया सकर्मक है)
लड़के आए। (भूत काल- 'आए' क्रिया अकर्मक है)
इस तरह स्पष्ट हो जाता है कि भूतकाल की क्रिया के साथ यदि कर्म न हो तो कर्ता के साथ 'ने' का प्रयोग नहीं किया जाता।

2. **कर्म कारक-** (परसर्ग-'को') जब वाक्य में क्रिया का फल कर्ता पर न पड़कर वाक्य की अन्य संज्ञा पर पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते हैं, जैसे-

(क) कमल पुस्तक पढ़ता है।

(ख) राम ने रावण को मारा।

इन वाक्यों में 'पढ़ना' और 'मारना' क्रिया के व्यापार का फल क्रमशः पुस्तक और रावण पर पड़ता है। अतः ये कर्म कारक हैं। इसका सूचक चिह्न-'को' है। कभी-कभी यह छिपा रहता है, जैसे- मैंने दूध पिया।

किया से पहले 'क्या' या 'किसको' लगाकर प्रश्न करने से जो उत्तर प्राप्त होता है, वही कर्म कारक होता है।

उदाहरण-

नेहा ने खाना खाया। क्या खाया ? "खाना" - "खाना" कर्म कारक है।

राजेश ने अंशु को पढ़ाया। किसको पढ़ाया? 'अंशु को' - 'अंशु को' कर्म कारक है।

ध्यान रखने योग्य बातें

(क) अप्राणीवाचक या निर्जीव कर्म के साथ प्रायः 'को' नहीं लगता; जैसे- उसने पुस्तक पढ़ी। मैंने निबंध लिखा। इन वाक्यों में **पुस्तक** और **निबंध** अप्राणीवाचक कर्म हैं, इनके साथ विभक्ति-चिह्न 'को' नहीं लगता।

(ख) कई वाक्यों में दो कर्म होते हैं, जैसे-अध्यापक ने **बच्चों को पाठ** पढ़ाया। माँ **बच्चे को दूध** पिलाती है। वाक्यों में दो-दो कर्म हैं-'बच्चों' और 'पाठ' तथा 'बच्चे' को और 'दूध'। इनमें निर्जीव कर्म के साथ 'को' का प्रयोग नहीं होता।

(ग) कभी-कभी कर्म को पहचानने के लिए 'कहाँ' लगाकर भी प्रश्न किया जाता है, जैसे- रमेश आगरा गया। प्रश्न- रमेश कहाँ गया ? उत्तर- आगरा (कर्म)

3. **करण कारक-(परसर्ग-'से')**

'करण' का अर्थ होता है- साधन या माध्यम।

जिस साधन या माध्यम से कर्ता क्रिया करता है, उसे करण कारक कहते हैं; जैसे-

(क) कमल **पेन से** पत्र लिख रहा है।

(ख) हम **चम्मच से** खीर खाते हैं।

(ग) लड़के **फुटबॉल से** खेल रहे हैं।

(घ) बच्चा **बस से** स्कूल जा रहा है।

(ङ) अध्यापिका **चॉक से** लिख रही है।

करण कारक में 'के साथ' या 'के द्वारा' विभक्ति-चिह्न भी प्रयोग होते हैं, जैसे- कमल ने चटनी **के साथ** समोसा खाया।

प्रश्न**उत्तर**

- | | |
|-------------------------------------|-----------|
| (क) कमल किससे पत्र लिख रहा है? | कलम से |
| (ख) हम किससे खीर खाते हैं ? | चम्मच से |
| (ग) लड़के किस चीज़ से खेल रहे हैं ? | फुटबॉल से |
| (घ) बच्चा किस साधन से स्कूल जा रहा | बस से |
| (ङ) अध्यापिका किससे लिख रही है ? | चॉक से |

इन वाक्यों में 'कलम', 'चम्मच', 'फुटबॉल', 'बस' और 'चॉक' इन साधनों द्वारा क्रिया (कार्य) संपन्न हो रही है। अतः ये करण कारक हैं।

करण कारक का विभक्ति-चिह्न- 'से' है। करण कारक को पहचानने के लिए क्रियाओं के साथ 'किस चीज़ से' या 'किससे' आदि लगाकर प्रश्न करने पर जो उत्तर मिलता है वह करण कारक होता है, जैसे- मुझे मोबाइल फोन द्वारा सूचित करना। पत्र के द्वारा सूचना मिलते ही मैं आ जाऊंगा।

4. संप्रदान कारक- (परसर्ग- 'को', 'के लिए') -

जिसे कुछ दिया जाए या जिसके लिए कोई कार्य किया जाए, वह संज्ञा या सर्वनाम संप्रदान कारक कहलाता है। संप्रदान कारक में 'के लिए', 'को' परसर्ग का प्रयोग होता है; जैसे-

- (क) विमल पिता जी के लिए फल लाया।
 (ख) पिता जी आयुष के लिए किताब लाए।
 (ग) पिता जी ने अंजली को मिठाई दी।

संप्रदान कारक को पहचानने के लिए क्रिया में, 'किसके लिए' तथा 'किसको' लगाकर प्रश्न करने पर जो उत्तर प्राप्त होता है, वह संप्रदान कारक होता है; जैसे-

प्रश्न**उत्तर**

- | | |
|-----------------------------------|----------------|
| (क) विमल किसके लिए फल लाया ? | पिता जी के लिए |
| (ख) पिता जी किसके लिए किताब लाए ? | आयुष के लिए |
| (ग) पिता जी ने किसको मिठाई दी ? | अंजलि को |

इन वाक्यों में 'पिता जी के लिए', 'आयुष के लिए' और 'अंजलि को' संप्रदान कारक हैं। जिसे कुछ दिया जाए या जिसके लिए क्रिया की जाए, उसे संप्रदान कारक कहते हैं। संप्रदान कारक का विभक्ति-चिह्न 'के लिए' तथा 'को' हैं।

विशेष:- 'को' विभक्ति-चिह्न का प्रयोग कर्म और संप्रदान दोनों कारकों में होता है; संप्रदान कारक में 'को' से कुछ वस्तु देने या उपकार करने का भाव मुख्य होता है;

जैसे- राकेश ने रोहन को बुलाया। (कर्म कारक)

राकेश ने रोहन को मिठाई दी। (संप्रदान कारक, देने का भाव)

5. अपादान कारक- (परसर्ग-'से'):- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से पृथक्ता, दूरी, तुलना आदि का बोध होता है, उसे अपादान कारक कहते हैं।

- (क) पेड़ से पत्ते गिरते हैं।
 (ख) बच्चा साइकिल से गिर पड़ा।

अपादान कारक का विभक्ति चिह्न 'से' है। अपादान कारक को पहचानने के लिए क्रिया के साथ 'कहाँ से' लगाकर प्रश्न करने पर जो उत्तर प्राप्त होता है वह अपादान कारक होता है, जैसे-

प्रश्न**उत्तर**

- (क) पत्ते **कहाँ से** गिरते हैं? पेड़ से
 (ख) बच्चा **कहाँ से** गिर पड़ा? साइकिल से

इन वाक्यों में 'पेड़ से' और 'साइकिल से' अपादान कारक हैं। इन वाक्यों में 'पत्ते का पेड़' तथा 'बच्चे का साइकिल से' अलग होना दिखाया गया है।

विशेष- करण कारक और अपादान कारक दोनों का विभक्ति चिह्न 'से' है किंतु यहाँ पर ध्यान रखना चाहिए कि करण कारक में 'से' विभक्ति चिह्न साधन के अर्थ में प्रयुक्त होता है जबकि अपादान कारक में अलग होने के अर्थ में, जैसे-
 मैं कलम से लिखता हूँ। (साधन, करण कारक)
 वह छत से गिर पड़ा। (अलग होना, अपादान कारक)

6. संबंध कारक-

संज्ञा के जिस रूप से वस्तुओं और व्यक्तियों में संबंध का पता चलता है, उसे संबंध कारक कहते हैं, जैसे-

- (क) यह **आयुष का** विद्यालय है।
 (ख) यह **नेहा का** घर है।
 (ग) यह **पुलिस की** गाड़ी है।

संबंध कारक को पहचानने के लिए दो संज्ञाओं या सर्वनाम के साथ 'किसका', 'किसकी' या 'किसके' लगाकर प्रश्न करने से जो उत्तर मिलता है, वह संबंध कारक होता है; जैसे,-

प्रश्न**उत्तर**

- (क) यह किसका विद्यालय है? आयुष का
 (ख) यह किसका घर है? नेहा का
 (ग) यह किसकी गाड़ी है? पुलिस की

इन वाक्यों में 'आयुष का' 'विद्यालय से' 'नेहा का घर से' 'पुलिस का गाड़ी से' संबंध बताया गया है। अतः इन वाक्यों में संबंध कारक है।

संबंध कारक का **विभक्ति-चिह्न** '-का', 'के', 'की', 'रा', 'रे', 'री' है।

7. अधिकरण कारक- (परसर्ग-'में', 'पर') संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के आश्रय या आधार का ज्ञान हो, उसे अधिकरण कारक कहते हैं। आधार के अंतर्गत स्थान और समय का भी बोध होता है; जैसे-

- (क) शेर **जंगल में** है।
 (ख) तोता **पेड़ पर** बैठा है।
 (ग) लड़का **कमरे में** बैठा है।

अधिकरण कारक पहचानने के लिए क्रिया के साथ 'कहाँ' या 'किसमें' लगाकर प्रश्न करने से जो उत्तर मिलता है, उसे अधिकरण कारक कहते हैं।

प्रश्न**उत्तर**

- (क) शेर कहाँ है? जंगल में
 (ख) तोता कहाँ है? पेड़ पर
 (ग) लड़का कहाँ है? कमरे में

इन वाक्यों में जंगल में, पेड़ पर और कमरे में शब्दों द्वारा क्रिया के आधार का ज्ञान होता है। अतः इन वाक्यों पर **जंगल में**, **पेड़ पर** और **कमरे में** अधिकरण कारक हैं।

8. संबोधन कारक- (परसर्ग-'हे!', 'अरे!', 'ओ!' आदि):- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी को पुकारना या बुलाना प्रकट हो, उसे संबोधन कारक कहते हैं, जैसे-

(क) अरे बच्चो! शोर मत करो।

(ख) अरे प्रणव! तुम कब आए ?

(ग) हे भगवान! उसे सद्बुद्धि प्रदान करें।

इन वाक्यों में क्रमशः बच्चो, प्रणव और भगवान शब्दों से पुकारना प्रकट होता है। अतः ये संबोधन हैं। हे!, अरे!, ओ! आदि संबोधन- चिह्न हैं।

स्मरणीय बिंदु

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध क्रिया से जाना जाता है, उसे कारक कहते हैं।

■ वाक्य में जिस संज्ञा या सर्वनाम पद से क्रिया के करने वाले का बोध होता है, उसे कर्ता कारक कहते हैं।

■ वाक्य में जिस संज्ञा या सर्वनाम पर क्रिया का फल या प्रभाव पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते हैं।

■ क्रिया के साधन को करण कारक कहते हैं।

■ जिसके लिए कोई कार्य किया जाए या जिसे कुछ दिया जाए, वह पद संप्रदान कारक होता है।

■ जिससे अलग होने का भाव प्रकट हो, उसे अपादान कारक कहते हैं।

■ संबंध प्रकट करने वाले पद संबंध कारक होते हैं।

• जिन संज्ञा या सर्वनाम पदों से क्रिया के आधार का बोध हो, वे अधिकरण कारक होते हैं।

शब्द के जिस रूप से किसी को पुकारा जाए, वह संबोधन कारक होता है।

■ कारकों के संबंध प्रकट करने के लिए जो चिह्न निश्चित किए गए हैं, उन्हें विभक्ति-चिह्न, कारक चिह्न या परसर्ग कहते हैं।

विशेषण (Adjective)

निम्नलिखित वाक्यों में आए रंगीन शब्दों पर ध्यान दीजिए-

1. छोटा बच्चा चल रहा है।
2. सुंदर फूल खिल रहा है।
3. दो पक्षी उड़ रहे हैं।
4. प्यासा कौआ पानी पी रहा है।
5. मुझे मीठा आम अच्छा लगता है।

उपर्युक्त वाक्यों में रंगीन छपे शब्द संज्ञा शब्दों से पहले प्रयोग किए गए हैं। उपर्युक्त वाक्यों में 'छोटा' शब्द बच्चे की, 'सुंदर' शब्द फूल की, 'दो' शब्द पक्षी की, 'प्यासा' शब्द कौवे की और 'मीठा' शब्द आम की विशेषता बता रहे हैं। ऐसे ही विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं।

संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्द की किसी भी विशेषता का बोध कराने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।

विशेष्य:- जिस संज्ञा या सर्वनाम शब्द की विशेषता बताई जाती है, उसे विशेष्य कहते हैं; जैसे-

सुंदर फूल - सुंदर - विशेषण

फूल - विशेष्य
 अच्छा लड़का - अच्छा - विशेषण
 लड़का - विशेष्य
 काला घोड़ा - काला - विशेषण
 घोड़ा - विशेष्य

विशेषण के भेद:-

विशेषण के निम्नलिखित चार भेद हैं

1. गुणवाचक विशेषण
2. संख्यावाचक विशेषण
3. परिमाणवाचक विशेषण
4. संकेतवाचक या सार्वनामिक विशेषण

1. गुणवाचक विशेषण-जो शब्द किसी संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, रंग या आकार आदि का बोध कराता है, वह गुणवाचक विशेषण कहलाता है; जैसे-

- (क) गिलास में गरम दूध है।
 (ख) मूर्ख लड़का कुछ नहीं समझता।
 (ग) मीठा आम सभी को अच्छा लगता है।
 (घ) हमारा तिरंगा आयताकार है।

इन वाक्यों में 'गरम', 'मूर्ख', 'मीठा' तथा 'आयताकार' शब्द विशेषण हैं। इन शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के क्रमशः स्पर्श, गुण, स्वाद एवं आकार का पता चलता है। अतः ये शब्द गुणवाचक विशेषण हैं।

अन्य गुणवाचक विशेषण इस प्रकार हैं-

- रंग : लाल, पीला, नीला, हरा, सफेद, बैंगनी आदि।
 स्पर्श : कोमल, खुरदरा आदि।
 गुण : अच्छा, बुरा, सुंदर, सीधा, सच्चा, ईमानदार आदि।
 आकार : छोटा, बड़ा, लंबा, चौड़ा, मोटा, पतला आदि।
 स्थान : ऊँचा, नीचा, बाहरी, भीतरी, विदेश, देश आदि।
 समय : मौसमी, नया, पुराना, भूत, वर्तमान, अगला, पिछला, दोपहर आदि।
 स्वाद : मीठा, खट्टा, नमकीन आदि।

2. संख्यावाचक विशेषण:- जो विशेषण संज्ञा या सर्वनाम की संख्या संबंधी विशेषता का बोध

कराएँ, वे संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं, जैसे-

- (क) एक लड़का भाग रहा है।
 (ख) तीन विद्यार्थी प्रार्थना कर रहे हैं।
 (ग) कुछ बच्चे खेल रहे हैं।
 (घ) हम प्रतिदिन विद्यालय जाते हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में 'एक', 'तीन', 'कुछ' एवं 'प्रतिदिन' शब्द संख्यावाचक विशेषण हैं।

संख्यावाचक विशेषण के भेद

इसके निम्नलिखित दो भेद हैं-

- (i) निश्चित संख्यावाचक विशेषण
- (ii) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण

(i) निश्चित संख्यावाचक विशेषण-जिस विशेषण शब्द से निश्चित संख्या का बोध होता है, उसे निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं, जैसे-

- (क) नेहा ने दो पुस्तकें खरीदीं।
- (ख) मेरे घर में पाँच कमरे हैं।
- (ग) चार गिलास पानी लाओ।
- (घ) एक पुस्तक मँगवा दो।

निश्चित संख्यावाचक विशेषण निम्नलिखित हैं-

गणनावाचक- जहाँ केवल गिनती का ज्ञान हो, जैसे- एक, दो, तीन, दस, बीस आदि।

क्रमवाचक- जहाँ केवल क्रम का ज्ञान हो; जैसे- प्रथम, द्वितीय, तीसरा, चौथा, पचासवाँ आदि।

समुदायवाचक- जहाँ केवल प्रत्येक का बोध हो; जैसे- प्रत्येक, हर एक, हर दूसरे दिन आदि।

(ii) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण- जिस विशेषण शब्द से संख्या का तो बोध हो, परंतु निश्चित संख्या का बोध न हो, उसे अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। जैसे-

- (क) कुछ फल ले आओ।
- (ख) थोड़े बादाम गिलास में डाल दो।
- (ग) सभी लड़के बाहर जाओ।
- (घ) कई लड़के इंतज़ार कर रहे हैं।

3. परिमाणवाचक विशेषण-जिन शब्दों से किसी वस्तु के नाप-तौल का बोध होता है उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं, जैसे

- (क) दुकानदार दो किलो आलू तौल रहा है।
- (ख) मुझे तीन मीटर कपड़ा चाहिए।
- (ग) पाँच लीटर तेल देना।
- (घ) थोड़ा नमक देना।

उपर्युक्त वाक्यों में 'दो किलो', 'तीन मीटर', 'पाँच लीटर' तथा 'थोड़ा' शब्द संज्ञा और सर्वनाम शब्दों के नाप-तौल और लंबाई का बोध करा रहे हैं, अतः ये परिमाणवाचक विशेषण हैं।

परिमाणवाचक विशेषण के निम्नलिखित दो भेद हैं-

- (i) निश्चित परिमाणवाचक विशेषण
- (ii) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण

(i) निश्चित परिमाणवाचक विशेषण-जो विशेषण संज्ञा की निश्चित मात्रा, माप-तौल आदि का बोध कराए, वह निश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहलाता है, जैसे- पाँच किलो आलू, एक क्विंटल गेहूँ आदि।

(ii) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण-कुछ विशेषण शब्द संज्ञा के परिमाण का बोध तो

कराते हैं, परंतु उनसे निश्चित परिमाण का बोध नहीं होता। ऐसे विशेषणों को अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं, जैसे-थोड़े फल, बहुत दूध आदि।

4. संकेतवाचक या सार्वनामिक विशेषण- कभी-कभी सर्वनाम शब्दों का प्रयोग विशेषणों की तरह किया जाता है। ऐसी स्थिति में ये सर्वनाम शब्द किसी संज्ञा की ओर संकेत करते हैं। इन्हें सार्वनामिक या संकेतवाचक विशेषण कहा जाता है, जैसे

(क) यह वृक्ष बहुत ऊँचा है।

(ख) इस डिब्बे में दस किलो तेल है।

(ग) उस लड़के को मेरे पास भेजो।

(घ) वह पुस्तक आलोक को दे दो।

उपर्युक्त वाक्यों में 'यह', 'इस', 'उस' तथा 'वह' शब्द सर्वनाम हैं जो संज्ञा शब्द पहले लगकर विशेषण का कार्य कर रहे हैं, इसलिए ये संकेतवाचक या सार्वनामिक विशेषण हैं।

सर्वनाम और सार्वनामिक विशेषण में अंतर

सर्वनाम- जो शब्द (यह, वह, कोई आदि) संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं और अकेले आते हैं, वे सर्वनाम कहलाते हैं।

सार्वनामिक विशेषण- जब सर्वनाम शब्द (वह, यह, कोई, कुछ आदि) संज्ञा के पहले आते हैं और संज्ञा की ओर संकेत करते हैं तो ये सार्वनामिक विशेषण बन जाते हैं, जैसे-

(क) वह खेलता है। (सर्वनाम) वह फूल मेरा है। (विशेषण)

(ख) कोई गा रहा है। (सर्वनाम) कोई बालक रो रहा है। (विशेषण)

संख्यावाचक विशेषण और परिमाणवाचक विशेषण में अंतर

संख्यावाचक विशेषण- जो शब्द संख्या का ज्ञान कराए, उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। गिनती कराने वाले शब्द संख्यावाचक होते हैं, जैसे-

नकुछ बालक खेल रहे हैं।

मीरा के पास चार पुस्तकें हैं। (संख्यावाचक)

परिमाणवाचक विशेषण-जिन वस्तुओं की नाप-तौल की जा सके, उनके वाचक शब्द परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं, जैसे-

दो लीटर पानी गिर गया।

थोड़ा-सा पानी नीचे गिर गया। (परिमाणवाचक)

प्रविशेषण-कुछ विशेषण शब्द विशेषणों की विशेषता बताते हैं, उन्हें प्रविशेषण कहते हैं। जैसे

(क) राम बहुत चतुर है।

(ख) सीता का रंग अधिक गोरा है।

(ग) मोहन काफ़ी मोटा है।

(घ) यह तोता गहरे हरे रंग का है।

यहाँ 'बहुत', 'अधिक', 'काफ़ी' और 'गहरे' शब्द प्रविशेषण हैं, जो क्रमशः 'चतुर', 'गोरा', 'मोटा' और 'हरे' विशेषणों की विशेषता बता रहे हैं।

विशेषणों की तुलना

1. रिया एक अच्छी बालिका है।

2. रिया सुधा से अच्छी है।

3. रिया सबसे अच्छी है।

ऊपर के तीन वाक्यों में गुणों की तुलना की गई है। जब गुण, दोष के आधार पर किसी व्यक्ति, स्थान या वस्तु की दूसरे से तुलना की जाती है, तो उसे विशेषण की तुलना कहते हैं।

विशेषण की अवस्थाएँ-विशेषणों की तीन अवस्थाएँ मानी गई हैं-

1. मूलावस्था- इसमें विशेषण शब्दों का सामान्य प्रयोग होता है। यहाँ किसी के साथ तुलना नहीं की जाती है, जैसे-
राम एक वीर बालक है।
सीता एक सुंदर कन्या है।

2. उत्तरावस्था- इसमें दो वस्तुओं या व्यक्तियों की तुलना करके एक की न्यूनता अथवा अधिकता बतलाई जाती है; जैसे
राम श्याम से अधिक वीर है। जैसे
सीता सीमा से अधिक सुंदर है।

3. उत्तमावस्था- इसमें दो से अधिक की तुलना की जाती है। उनमें एक को सभी वस्तुओं या व्यक्तियों से न्यून या अधिक बताया जाता है; जैसे-
राम सबसे वीर है।
सीता कक्षा में सुंदरतम है।

विशेषण की अवस्थाओं के रूप

1. विशेषण की मूलावस्था के साथ 'अधिक' और 'सबसे अधिक' शब्दों का प्रयोग कर उत्तरावस्था और उत्तमावस्था के रूप बनाए जा सकते हैं, जैसे-

उत्तरावस्था	मूलावस्था	उत्तमावस्था
ऊँचा	अधिक ऊँचा	सबसे ऊँचा
मोटा	अधिक मोटा	सबसे मोटा
छोटा	थोड़ा छोटा	सबसे छोटा
चतुर	अधिक चतुर	सबसे चतुर

2. संस्कृत के शब्दों (तत्सम शब्दों) के साथ 'तर' या 'तम' प्रत्यय लगाकर उत्तरावस्था तथा उत्तमावस्था के रूप बनाए जा सकते हैं, जैसे-

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
लघु	लघुतर	लघुतम
उच्च	उच्चतर	उच्चतम
श्रेष्ठ	श्रेष्ठतर	श्रेष्ठतम
प्रिय	प्रियतर	प्रियतम
सुंदर	सुंदरतर	सुंदरतम
मधुर	मधुरतर	मधुरतम

विशेषण शब्दों की रचना

कुछ शब्द मूल रूप से विशेषण होते हैं। कुछ विशेषण शब्दों की रचना निम्नलिखित शब्दों से की जाती है-

1. संज्ञा से विशेषण बनाना-

संज्ञा	विशेषण	संज्ञा	विशेषण
जापान	जपानी	रोग	रोगी
स्वदेश	स्वदेशी	लोभ	लोभी
भारत	भारतीय	राष्ट्र	राष्ट्रीय
भूत	भौतिक	वेद	वैदिक
नमक	नमकीन	दया	दयालु

2. सर्वनाम शब्दों से विशेषण बनाना:-

सर्वनाम	विशेषण	सर्वनाम	विशेषण
यह	ऐसा	हम	हमारा
कौन	कौन-सा	मैं	मुझ-सा
वह	वैसा		

3. क्रिया शब्दों से विशेषण बनाना:-

क्रिया	विशेषण	क्रिया	विशेषण
पठ	पठित	लड़ना	लड़ाकू
लिखना	लिखित	कहना	कथित
खेल	खिलाड़ी	गाना	गाया

4. अव्यय शब्दों से विशेषण बनाना:-

अव्यय	विशेषण	अव्यय	विशेषण
भीतर	भीतरी	ऊपर	ऊपरी
बाहर	बाहरी	आगे	अगला

स्मरणीय बिंदु

- संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को 'विशेषण' कहते हैं।
- विशेषण जिस शब्द की विशेषता बताते हैं, वे विशेष्य कहे जाते हैं।
- विशेषण के चार भेद हैं- गुणवाचक, परिमाणवाचक संख्यावाचक तथा सार्वनामिक।
- जो विशेषण विशेषणों की भी विशेषता बताते हैं, वे प्रविशेषण कहलाते हैं।
- विशेषण की तीन अवस्थाएँ होती हैं- मूलावस्था, उत्तरावस्था और उत्तमावस्था।
- विशेषणों की रचना संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया और अव्यय शब्दों में 'प्रत्यय' जोड़कर की जा सकती है।

क्रिया verb

बच्चे गेंद खेल रहे हैं।
 किसान हल चला रहा है।
 राहुल पुस्तक पढ़ रहा है।
 पक्षी उड़ रहे हैं।

वर्षा हो रही है।

दादा जी अखबार पढ़ रहे हैं।

नेहा आम खा रही है।

सुगंधित तथा शीतल हवा चल रही है।

बच्चे खेल रहे हैं।

ऊपर के वाक्यों में मोटे छपे शब्दों द्वारा किसी-न-किसी कार्य या घटना के होने या किए जाने का बोध हो रहा है या फिर किसी वस्तु या व्यक्ति की स्थिति अथवा अवस्था का पता चल रहा है।

अतः सभी मोटे छपे शब्द क्रिया है। क्रिया के बिना कोई भी वाक्य पूरा नहीं होता।

परिभाषा: जिन शब्दों से किसी कार्य के करने या होने का बोध हो, उन्हें क्रिया कहते हैं।

नीचे दिए गए उदाहरणों से इसे भली-भाँति समझा जा सकता है-

काम का करना घटना का होना किसी वस्तु की अवस्था

प्रणव पढ़ रहा है। वर्षा हो रही है। पेन मेज़ पर है।

अंशु गा रही है। नदी बह रही है। साइकिल बाहर खड़ी है।

उपर्युक्त वाक्यों में मोटे पद क्रियाएँ हैं।

धातु - निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए-

वह पढ़ता है।

वे पढ़ेंगे।

तुम पढ़ो।

तुमने पढ़ा।

इन सभी क्रियाओं में 'पढ़' आया है। अर्थात् क्रिया का मूल रूप यही है। इसे ही **धातु** कहते हैं। धातु में 'ना' जोड़ने पर क्रिया का **सामान्य रूप** बनता है।

नीचे कुछ क्रियाओं के सामान्य रूप एवं उनके धातु रूप दिए जा रहे हैं:-

सामान्य रूप	धातु रूप	सामान्य रूप	धातु रूप
हँसना	हँस	लिखना	लिख
पढ़ना	पढ़	गाना	गा
देखना	देख	सोना	सो
दौड़ना	दौड़	जाना	जा
आना	आ	रोना	रो

क्रिया के भेद

क्रिया के भेद दो आधार पर किए जाते हैं-

1. कर्म के आधार पर क्रिया के भेद
2. रचना के आधार पर क्रिया के भेद

1. **कर्म के आधार पर क्रिया के भेद**

(क) सकर्मक क्रिया

(ख) अकर्मक क्रिया

(क) सकर्मक क्रिया-

राजेश **खाना** खा रहा है।

अमन **पत्र** लिख रहा है।

उपर्युक्त वाक्यों में **खा रहा है** और **लिख रहा है**, क्रियाएँ हैं और **खाना** और **पत्र** कर्म है। क्रिया का प्रभाव इन पर ही पड़ता है। खाने और लिखने का कार्य तो कर्ता (राजेश और अमन) करते हैं तथा इनका प्रभाव कर्म पदों पर पड़ रहा है। अतः ये दोनों सकर्मक क्रियाएँ हैं।

जिन क्रियाओं का कर्म हो और कर्ता द्वारा की गई क्रिया का फल कर्ता को छोड़कर अन्य किसी पर पड़े, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।

सकर्मक क्रियाओं के अन्य उदाहरण-

(क) वरुण पुस्तक पढ़ता है।

(ख) सुमन दूध पीती है।

(ग) रमेश फल खाता है।

(घ) नेहा उसे पढ़ाती है।

वरुण क्या पढ़ता है ? - पुस्तक, सुमन क्या पीती है? - दूध,

रमेश क्या खाता है ? फल,

नेहा किसको पढ़ाती है? उसे,

यहाँ इन प्रश्नों के उत्तर मिल रहे हैं। जब प्रश्नों के उत्तर मिले तो क्रिया सकर्मक होती है।

अतः ये सभी क्रियाएँ सकर्मक हैं।

सकर्मक क्रिया की पहचान

सकर्मक क्रिया की पहचान करने के लिए क्रिया के साथ

'क्या' या 'किसको' लगाकर प्रश्न कीजिए; जैसे कि ऊपर के वाक्यों में किया गया है।

(ख) अ

कर्मक क्रिया

राजू **सो** रहा है।

सरस **हँस** रहा है।

अमन **दौड़** रहा है।

उपर्युक्त वाक्यों में **सो रहा है**, **हँस रहा है** और **दौड़ रहा है** अकर्मक क्रियाएँ हैं।

(क) इन वाक्यों में कर्म नहीं है।

(ख) इन क्रियाओं के व्यापार का फल कर्म नहीं बल्कि कर्ता पर ही पड़ रहा है।

जिन क्रियाओं का कर्म नहीं होता तथा क्रिया का फल कर्ता पर पड़ता है, वे क्रियाएँ **अकर्मक क्रिया** कहलाती हैं।

अकर्मक क्रियाओं के अन्य उदाहरण:-

माधव **नहा** रहा है।

अंशु **तैर** रही है।

बच्चा **रो** रहा है।

चिड़िया **उड़ती** है।

इन वाक्यों में **नहाना**, **रोना**, **तैरना** एवं **उड़ना** का फल क्रमशः कर्ता- माधव, बच्चा, अंशु तथा चिड़िया पर पड़ रहा है। अतः ये क्रियाएँ अकर्मक क्रियाएँ हैं।

अकर्मक क्रिया की पहचान:-

मनोज पढ़ता है। 'पढ़ता है' क्रिया के लिए प्रश्न करें क्या पढ़ता है ?' उत्तर मिला- पता नहीं, क्या पढ़ता है। इस प्रश्न का उत्तर 'नहीं' में मिला। इसका अर्थ हुआ कि 'पढ़ता है' क्रिया का कर्म नहीं है। अतः यह क्रिया अकर्मक है। हिंदी में अकर्मक से भी सकर्मक क्रिया बनती है; जैसे

अकर्मक	सकर्मक	अकर्मक	सकर्मक
लुटना	लुटाना	मरना	मारना
कटना	काटना	खुलना	खोलना
चलना	चलाना	घिरना	घेरना
उड़ना	उड़ाना	लुटना	लुटाना

एक ही क्रिया का सकर्मक एवं अकर्मक के रूप में प्रयोग एक

(क) सकर्मक क्रिया- प्रणव पुस्तक पढ़ता है।

अकर्मक क्रिया - प्रणव पढ़ता है।

(ख) सकर्मक क्रिया - रानी कुर्सी पर बैठी है।

अकर्मक क्रिया - रानी बैठी है।

(ग) सकर्मक क्रिया - आकाश घर चला गया।

अकर्मक क्रिया - आकाश चला गया।

(घ) सकर्मक क्रिया - पिता जी कार्यालय से आए।

अकर्मक क्रिया - पिता जी आए।

(ङ) सकर्मक क्रिया - संगीता खो-खो खेल रही है।

अकर्मक क्रिया संगीता खेल रही है।

2. रचना के आधार पर क्रिया के भेद:-

रचना के आधार पर क्रिया के निम्नलिखित भेद होते हैं -

(क) संयुक्त क्रिया-

मूल क्रिया के साथ रंजक क्रिया के जोड़ने से जो क्रिया बनती है, वह संयुक्त क्रिया कहलाती है, जैसे- कर डालना, छान मारना, जा मरना भाग जाना, खा लेना, उठ बैठना, रख देना, रो पड़ना। संयुक्त क्रियाओं में डालना, मारना, भरना, जाना, लेना, बैठना, देना, पड़ना क्रियाएँ रंजक हैं।

(ख) नामधातु क्रिया-

जो क्रिया संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषणों की सहायता से बनती है उसे नामधातु क्रिया कहते हैं, जैसे-

संज्ञा - बात

नामधातु क्रिया - बतियाना

विशेषण- मोटा

नामधातु क्रिया - मुटाना

अनुकरणवाची शब्द - हिनहिन

नामधातु क्रिया - हिनहिनाना

(ग) प्रेरणार्थक क्रिया-

जिस क्रिया से कर्ता के स्वयं कार्य करने का बोध न होकर किसी अन्य से कराए जाने का बोध होता है, उसे प्रेरणार्थक क्रियाएँ कहते हैं।

(क) माधव कुली से सामान उठवाता है।

(ख) महेश रमेश से बटन लगवाता है।

(ग) सावित्री नौकरानी से बच्चे को सुलवाती है।

इन वाक्यों में माधव, महेश और सावित्री कर्ता है। ये सभी स्वयं काम नहीं करते बल्कि कुली, रमेश, नौकरानी से काम कराते हैं। इसलिए उठवाता है, लगवाता है, सुलवाती है प्रेरणार्थक क्रियाएँ हैं।

सभी प्रेरणार्थक क्रियाएँ सकर्मक होती हैं, जैसे- चलवाना, सुनवाना, लिखवाना, पढ़वाना। प्रेरणार्थक क्रिया की रचना के लिए मूल क्रिया में 'आना' और 'वाना' प्रत्यय जोड़ते हैं, जैसे-

प्रथम क्रिया	प्रेरणार्थक क्रिया	द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया
लिखना	लिखाना	लिखवाना
सोना	सुलाना	सुलवाना
सुनना	सुनाना	सुनवाना
भागना	भागाना	भागवाना

(घ) पूर्वकालिक क्रिया:- मुख्य क्रिया से पहले हुई क्रिया को पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं, जैसे-

श्वेता दौड़कर स्कूल गई।

सीता पढ़कर सो गई।

इन वाक्यों में दौड़कर, पढ़कर पूर्वकालिक क्रियाएँ हैं। ये क्रियाएँ मुख्य क्रियाएँ 'गई' तथा 'सो गई' से पहले हुई हैं। प्रायः मूल धातु में 'कर' अथवा 'करके' जोड़कर पूर्वकालिक क्रिया बनाई जाती है।

स्मरणीय बिंदु :-

■ जिस पद से किसी कार्य के करने या होने का बोध हो, उसे क्रिया कहते हैं।

■ क्रिया के भेद दो आधार पर किए जाते हैं

कर्म के आधार पर क्रिया के भेद-

1. सकर्मक क्रिया. 2. अकर्मक क्रिया

■ रचना के आधार पर क्रिया के भेद-

1. संयुक्त क्रिया

2. प्रेरणार्थक क्रिया

3. नामधातु क्रिया

4. पूर्वकालिक क्रिया

■ जिन क्रियाओं को कर्म की आवश्यकता नहीं होती, उन्हें अकर्मक क्रिया कहते हैं।

■ जिन क्रियाओं को कर्म की आवश्यकता पड़ती है, उन्हें सकर्मक क्रिया कहते हैं।

मूल क्रिया के साथ रंजक क्रिया जोड़ने से जो क्रिया बनती है, उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं।

■ जिस क्रिया से कर्ता द्वारा स्वयं किसी कार्य को करने का बोध न होकर किसी अन्य से कराए जाने का बोध होता है, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।

जो क्रिया संज्ञा, विशेषणों तथा अनुकरणवाची शब्दों की सहायता से बनाई जाती है, उसे नामधातु क्रिया कहते हैं।

मुख्य क्रिया से पहले हुई क्रिया को पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं।

CLASS:I SEMESTER B.COM

SUBJECT HINDI

DURATION:

MARKS: 60

I निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक शब्द या वाक्य में लिखिए। (10X1 = 10)

1. गौरीपुर गाँव के जमींदार कौन थे ?
2. रजिया का पति का नाम बताइए ।
3. लेखक ने किन स्थानों की यात्रा की ?
4. महात्मा गान्धीजी के सिद्धांत कौन-कौन से हैं?
5. भोलाराम किस शहर का निवासी था?
6. गोपाल प्रसाद के अनुसार किस पर टैक्स लगना चाहिए ?
7. गप-शप पाठ के लेखक कौन हैं ?
8. लेखक सोनारी के पास किस नदी की बाढ़ में फँस गए थे?
9. गाँधीजी के पितृश्री किस रियासत के दीवान थे?
10. 'रीड की हड्डी' एकांकी के नाटककार का नाम लिखिए ?

किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए । (2X7=14)

1. बुद्धिमान लोग मूर्खों की बात पर ध्यान नहीं देते।
2. घर जाकर जरा यह पता लगाइयेगा कि आपके लाडले बेटे की रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं यानी बैकबोन, बैकबोन ।
3. उस पर इन्कम टैक्स तो बकाया नहीं था? हो सकता है, उन लोगों ने रोक लिया हो ।

III 1. रजिया के बचपन के बारे में लिखिए। (1X16=16)

(अथना)

2. 'राष्ट्रपिता महात्मागांधी' संस्मरण के माध्यम से लेखक समाज को क्या संदेश देना चाहते हैं?

IV किसी एक पर टिप्पणी लिखिए।

(1x5=5)

1. भोलाराम ।
2. श्रीकंठ सिंह ।

V. लिंग ।

(3X1=3)

1. विदुषी का पुल्लिंग रूप होगा।
2. राजा ने दान दिया' वाक्य का स्त्रीलिंग रूप होगा ।
3. लिंग की दृष्टि से 'दही' शब्द है ?

1.स्त्रीलिंग 2.पुल्लिंग

VI वचन

(3 X1 = 3)

1. श्रीमती शब्द का बहुवचन होगा।
2. गुड़िया का बहुवचन होगा।
3. वह आगे बैठ गया परिवर्तन कीजिए।

VII विशेषण

(3X1-3)

1. घोडा तेज दौड़ता है। (इसमे विशेषण है)
2. कोई आदमी उसे मार रहा था। (इस वाक्य में विशेषण है)
3. गिलास में थोड़ा दूध है। (इस वाक्य में विशेषण है)

VIII निम्नलिखित वाक्यों में से क्रिया शब्द लिखिए ।

(3X1 =3)

- 1 लड़किया गेंद खेल रही है ।
2. अध्यापिका पढ़ा रही है ।
3. बच्चे हँस रहे हैं।

IX नीचे दिए गए खाली स्थानों में उचित कारक विभक्तियाँ लिखिए । (3X1-3)

1. भालू----रंग काला होता है।
2. गोपाल गाँव -- शहर जाता है।
3. दिल्ली हमारे देश----- राजधानी है।
